ISSN2349-8927

Shodh Pratibha

(Biannual & Bi-Lingual)
Journal of Educational Research

Vol. 6 No. 2 September 2018

INSTITUTE OF ADVANCED STUDY IN EDUCATION (IASE)

Tarbahar Naka, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001
Website : www.iasebsp.com E-mail :iasebilaspur@gmail.com
Ph. : 07752-404708, 653535

SHODH PRATIBHA

(Bi-Annual & Bi-Ligual)

Advisory Board :

1. Dr. R. S. Dubey (Rtd. Principal, Govt. College of Education, Bilaspur)
2. Smt. A. Kujur (Rtd. principal)
3. Dr. R. D. Singh (Rtd. Asst. Prof. SCERT Raipur)
4. Dr. R. S. Yadav (Rtd. Asst. Prof. govt. College of Education, Bilaspur)
5. Mrs. Ramakanti Sahu (Prof. IASE, Bilaspur)

Ediror in Chief:

1. Dr. Nishi Bhambri (Principal, IASE, Bilaspur)

Editorial Board (Faculty IASE, Bilaspur)

1.	Dr. Kshama Tripathi	-	Asst. Prof.	-	Faculty, IASE, Bilaspur
2.	Dr. B. V. Ramana Rao	-	Asst. Prof.	-	Faculty, IASE, Bilaspur
3.	Smt. Reema Sharma	-	Asst. Prof.	-	Faculty, IASE, Bilaspur
4.	Smt Preeti Tiwari	-	Asst. Prof.	-	Faculty, IASE, Bilaspur
5.	Dr. Sanjay Ayde	-	Asst. Prof.	-	Faculty, IASE, Bilaspur
6.	Dr. A. K. Poddar	-	Asst. Prof.	-	Faculty, IASE, Bilaspur
7.	Smt. Neela Chaudhary	-	Lecture.	-	Faculty, IASE, Bilaspur

संपादक की कलम से.....

"शोध प्रतिभा" के प्रस्तुत अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में संस्था के आचार्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रस्तुत अंक में शिक्षा के समस्त स्तरों से संबंधित शैक्षिक समस्याओं से जुड़े शोध आलेख प्रस्तुत किए गए हैं। पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, हायर सेकेण्डरी स्तर, विज्ञान शिक्षण, शिक्षा का अधिकार, शिक्षण प्रशिक्षण पेडॉगोजी, शालेय स्वच्छता, निःशक्त बच्चों से जुड़ी समस्याओं आदि का क्षेत्र सम्मिलित है।

पाठ्य पुस्तकों में निहित मूल्यों के संदर्भ में सुझाव प्राप्त हुए कि कक्षा में अध्यापन को मूल्यों से जोड़ना होगा, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी प्रशिक्षार्थियों में मूल्यों की समझ विकसित होना अनिवार्य है। छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति, शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि उत्तम शैक्षिक वातावरण में पोषित होती है। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा योजना का प्रभाव शालाओं में भौतिकएवं मानवीय संसाधनों में परिलक्षित हुआ है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम के प्रभाव से बच्चों के प्रवेश में न्यूनतम वृद्धि हुई है। समय–सारणी का 80% पालन हो रहा है। आरटीई का अभी बच्चों की उपस्थिति पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। विद्यालय परिसर के सौंदर्यीकरण के लिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सुधार व सहभागिता को बढ़ाया जाना चाहिए। बच्चों के पाठ्यपुस्तकों की समझ में ग्रंथालय की भूमिका को प्रभावशाली बनाना होगा। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के प्रति प्राचार्य, शिक्षकों एवं बच्चों को जागरूक रहना होगा। शिशु शिक्षा को औपचारिक शिक्षा में प्रवेश की तैयारी हेतु बच्चों के स्तर के अनुकूल बनाना होगा। शोध प्रतिभा शैक्षिक क्षेत्र में से जुड़े शिक्षकों, विशेषज्ञों, शोधार्थियों में शोध कार्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने में सशक्त माध्यम है।

समस्त पाठक के आलेखों की समीक्षा कर सुझाव प्रस्तुत करें, आपके सहयोग हेतु निवेदन करते हैं....

डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी
प्राचार्य

"शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता का अध्ययन बिलासपुर नगर के संदर्भ में"

डॉ. क्षमा त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

श्री डी.के.जैन
व्याख्याता
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

सारांश

शाला पूर्व शिक्षा जिसे बाल मंदिर कहें या बालवाड़ी या आंगनबाड़ी केन्द्र ये ऐसे स्थान है जो हर बालक को विद्यालय जाने के पूर्व जीवन के सहज व्यवहारों की शिक्षा देते हैं। इन केन्द्रों की भूमिका शैक्षिक पृष्ठभूमि में बहुत महत्वपूर्ण है। ''अपरिचित बालकों को अपरिचित दुनिया के लिए शिक्षित करना पालक, राज्य, राष्ट्र के लिए चुनौती पूर्ण कार्य है।'' अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education) बालक के जन्म से कुछ मास पहले प्रारंभ हो जाती है । मॉ की गोद एवं पिता के स्नेहपूर्ण संरक्षण के बीच प्रारंभ होकर सामाजिक परिवेश के साथ ही साथ स्वजनों, परिजनों, हमजोलियों, परिचितों, संगे संबंधियों से शैक्षिक संस्थानों यथा बाल केन्द्रों से प्रारंभ होकर विश्व विद्यालयों की सीढ़ी पर चढ़ती है। इस प्रकार शिक्षा अपने आप अप्रत्यक्ष एवं अचेतन रूप में जीवन में सदैव चलती है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता की सजगता शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करने का कार्य करती है। प्रस्तुत शोध इन उद्देश्यों की पूर्ति में हम कहॉ तक सफल हैं, जानने का प्रयास है।

प्रस्तावना :–

21 वीं सदी की दहलीज पर पॉव रखने की तैयारी में हम सब जुटे हैं। कुछ दिनों बाद ही हम अपना कदम यहॉ रखेंगे। उभरते भारत में शिक्षा द्वारा नये आदमी गढ़ने की गूँज सुनाई देने लगी है। साथ ही प्रत्येक सामाजिक समस्या का समाधान शिक्षा में खोजा जाने लगा है। चाहे वह मसला प्राकृतिक संसाधनों के संकट का हो या मानवीय मानसिक विकृतियों का। चाहे वह आर्थिक वृद्धि का हो या सामाजिक सद्भाव। ऐसे सभी मसलों का हल शिक्षा की मुख्य धारा युवाओं के जुड़ने से संभव होगा, पर इन युवाओं की नींव मजबूत होगी तब जब शाला पूर्व शिक्षा की नींव मजबूत होगी।

बच्चों की संख्या की दृष्टि से विश्व मे भारत का स्थान प्रथम स्थान पर है। जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी 121.02 करोड़ में 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों की जनसंख्या 1587 करोड़ है जो कुल जनसंख्या का 13.12 प्रतिशत है।

जनगणना 2011 के अनुसार छ.ग. राज्य की कुल आबादी 2.55 करोड़ में 35.84 लाख आबादी 6 वर्ष तक की आयु के बच्चों का है। जिसमें बालक 18.25 लाख एवं बालिका 17.59 लाख है। कुल आबादी में 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों की संख्या 14.03 प्रतिशत है।

भारत सरकार द्वारा 22 अगस्त 1974 में राष्ट्रीय बाल नीति अपनायी गयी जिसमें बच्चों को राष्ट्र की अमूल्य निधि घोषित की गई। इसके कारण पोषण तथा देख रेख को राष्ट्र का दायित्व माना गया तथा बच्चों के विकास के लिए उन्हे पर्याप्त सेवा उपलब्ध कराने का दायित्व राज्य को दिया गया। बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं की प्राथमिकता निर्धारित तथा समन्वित तरीके से उन पर अमल करने के लिए राष्ट्रीय बाल नीति में एक खाता उपलब्ध कराया, पर यदि भारत के शैक्षिक इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालें तो प्राचीन काल से ही 6 वर्ष के पूर्व के बच्चों हेतु सरकार द्वारा बालवाड़ी केन्द्रों की व्यवस्था की गई थी हमनें स्वयं इन केन्द्रों में अपनी उपस्थिति दी है। इतना ही नही स्वास्थ्य केन्द्रों (हास्पिटल) में दूध पाउडर बच्चों को ही दिया जाता था। अतः यह कहें की 1974 में 'राष्ट्रीय नीति' अपनायी गई किन्तु 1974 के पूर्व भी बच्चों हेतु सरकार ने कार्य किया है विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं शिक्षा विदों ने चिंतन कर व्यवस्था के संदर्भ में बात की है।

शोध प्रश्न :–

1. आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकर्ताओं की सजगता बच्चों के प्रति सकारात्मक है।
2. आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को बच्चों के भाषायी, सामाजिक, शारीरिक, संज्ञानात्मक विकास के प्रति सजगता है।
3. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों के विकास के लिए गतिविधियॉ कराई जाती है।
4. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा शालापूर्व अनौपचारिक शिक्षा हेतु प्रयास किया जाता है।
5. स्वास्थ्य जॉच, स्वास्थ्य पोषण एवं टीकाकरण के प्रति सजगता है।
6. संदर्भ सेवा के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं द्वारा सहयोग लिया जाता है।

जनसंख्या –प्रस्तुत शोध के जनसंख्या से तात्पर्य बिल्हा विकास खंड के बिलासपुर शहर के समस्त आंगनबाड़ी केन्द्र एवं उसमे कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं से है।

न्यादर्श– न्यादर्श समूचे से चुनी गई इकाईयों का समूह है इससे संपूर्ण जनसंख्या के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त किया गया।

समस्या के व्यापक क्षेत्र, समय, अर्थ, की सुविधा एवं अध्ययन की उपयुक्तता को ध्यान मे रखते हुए शोध बिलासपुर जिला के बिल्हा विकासखण्ड के बिलासपुर नगर के 50 आंगनबाड़ी केन्द्रों से चयन किया गया। चयनित केन्द्रों से आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का चयन न्यादर्श के रूप में दिया गया तालिका कमांक 01 चयनित आंगनबाड़ी केन्द्रों एवं कार्यकर्ताओं की संख्या दर्शायी गई है।

तालिका क्र. 01

स क्र.	आंगनबाड़ी केन्द्र की संख्या	कार्यकर्ता की संख्या
1	बिलासपुर नगर के आंगनबाड़ी केन्द्र आंगनबाड़ी केन्द्रों – 50	50

चरांक– शोध चर निम्नानुसार है –

स्वतंत्र चर – शिशु शिक्षा एवं स्वास्थ्य।

आश्रित चर – आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सजगता।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षणात्मक प्रकृति का अध्ययन है।

तालिका कमांक – 01

विगत तीन वर्षो में दिए गये प्रशिक्षण का स्वरूप एवं प्राप्त प्रशिक्षण प्रयोज्यों से प्राप्त अभिमत

प्रयोज्यो से प्राप्त अभिमत	प्रत्या स्मरण	BLO	टीकाकरण	मूलभूत	ECCL	पोलियो	फलसंरक्षण	वर्टिकल	उ. अप्रा प्त	कुल उत्तर दाता
2015–16	12	01	7	–	14	5	05		6	44
2016–17	21	06	02	01	03	03	06		8	42
2017–18	01	02	02	00	27	00	07	1	10	40
योग	34	09	11	01	44	08	18	01	24	126

परिणाम एवं निष्कर्ष :– उपरोक्त तालिका क. 01 से विगत तीन वर्षो में विभाग द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की प्रकृति से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2015–16 में कमशः प्रत्यास्मरण में 12,बी. एल.ओ. मे 01, टीकारण – 07, मूलभूत मे निरंक ECCE में 14, पोलियों में 5 फल सरंक्षण में 5 कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त करने के संबंध में सहमति जताई। 2016–17 में प्रत्यास्मरण–21, BLO –06 टीकाकरण – 02 मूलभूत – 01, ECCE –03, फलसंरक्षण–05 कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त करने के संदर्भ में अभिमत दिया, इसी तरह 2017–18 में प्रत्या0–07 BLO –02, टीकाकरण–02, मूलभूत–प्रशिक्षण में निरंक, ECCE –27 पोलियो –प्रशिक्षण निरंक फल संरक्षण–07 वर्टिकल प्रशिक्षण में 01 कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त होने के संदर्भ में अभिमत दिया।

तालिका कमांक – 3

पद क03 कौन सा प्रशिक्षण उपयोगी और सार्थक रहा प्राथमिकता कम –

• सभी प्रशिक्षण उपयोगी रहा	04	–
• खेल में अभिनय गीत द्वारा कविता सुनाना	4	02
• ग्रोथ चार्ट	2	–
• पंजियों का संधारण	3	2
• मूलभूत प्रशिक्षण	4	4
• ECCE	24	16
• टीकाकरण, शारीरिक–मानसिक पोषण आहार	4	2
• प्रत्याभरण	19	4
• फल संरक्षण	5	1
• पल्स पोलियो	1	1
• हितग्राहियों में वार्तालाप	12	1
• वर्टिकल प्रशिक्षण	1	1
	1	1

परिणाम एवं निष्कर्षः– उपरोक्त तालिका में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा प्राप्त अभिमत से स्पष्ट होता है ECCE एवं प्रत्यास्मरण प्रशिक्षण को ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया। 4 उत्तरदाताओं ने सभी प्रशिक्षण को उपयोगी माना वही वर्टिकल पल्स पोलियो, ग्रोथ चार्ट, हितग्राहियों द्वारा वार्तालाप, खेल–खेल में शिक्षा पंजियों का संधारण, जैसे प्रशिक्षण के संदर्भ में अभिमत कम ही प्राप्त हुए।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं हेतु आयोजित प्रशिक्षण का स्वरूप विस्तृत है। तथापि उसकी प्रकृति के संदर्भ में स्पष्ट अभिमत लिखित में देने मे कार्यकर्ता जागरूक नही है जबकि क्षेत्रीय महिला प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रशिक्षण संदर्शिका के अध्ययन से विषय एवं प्रशिक्षण की गंभीरता, आवश्यकता स्पष्ट रूप से उल्लेखित है।

प्रश्न उठता है क्या इसका अध्ययन सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ने गंभीरता से किया होगा। यह भी कि यदि करते तो ऐसे कार्यकर्ता जिन्होंने कोई अभिमत नहीं लिखा वे अवश्य अपना अभिमत अभिमतावली में प्रस्तुत करते। कार्यकर्ताओं को इस तरह के संदर्शिकाओं का समय–समय पर अध्ययन करने, जानकारी बढ़ानें की आवश्यकता है। प्रशिक्षण हेतु भी स्वमेव प्रेरणा से जुड़ने की आवश्यकता है इससे जागरूकता एवं कार्य के प्रति रूचि बढ़ेगी। प्रशिक्षण ऊबाऊ नहीं होगा।

पद क04 कौन–सा प्रशिक्षण आपकी दृष्टि से आवश्यक नहीं था, प्राथमिकता कम में लिखें. संदर्भित प्रश्न पूछने का उद्देश्य यह ऑकलन करता है कि वास्तव में दिये जाने वाले प्रशिक्षण को कितनी प्राथमिकता कार्यकर्ताओं द्वारा दी जाती है।

26 कार्यकर्ताओं ने ECCE, 02 ने प्रत्यास्मरण, 03 ने मूलभूत प्रशिक्षण,01 ने अभिनय, गीत, कविता, नृत्य द्वारा प्रशिक्षण मे सहमति दर्शायी। अतः इस तरह के प्रशिक्षण समय–समय पर विभाग द्वारा अवश्य आयोजित किया जाना चाहिए।

पद क.06 पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संबंध मे कौन–कौन से कार्यकम चलाये जाते है। पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा के अन्तर्गत चलाए जाने वाले कार्यकम के संबंध में विभिन्न केन्द्रों के आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को अभिमतावली प्रशासित की गई। कार्यकर्ताओं से प्राप्त अभिमत निम्नानुसार प्राप्त हुए जो तालिका कमांक – 6 में दर्शाया गया है।

तालिका कमांक – 6

प्रयोज्य	गृह भेंट	जागृति शिविर/सास बहु सम्मेलन	महिला मंडली व स्वसहायता समूह के जागरूकता कार्यकम	उपर्युक्त सभी	अभिमत अप्राप्त
50	10	04	05	30	01

परिणाम एवं निष्कर्ष :–उपरोक्त अभिमतावली से प्राप्त अभिमत के विश्लेषण से स्पष्ट है कार्यकर्ताओं में 10 कार्यकर्ताओं गृह भेंट, 04 कार्यकर्ताओं ने जागृति शिविर तथा सास बहू सम्मेलन, 05 ने महिला मंडली स्वसहायता समूह हेतु जागरूकता कार्यकम 30 ने उपरोक्त सभी कार्यकम केन्द्रों में संचालित होने में अभिमत दिया जबकि 01 कार्यकर्ताओं ने कोई उत्तर नही दिया। प्राप्त अभिमत से स्पष्ट है अलग–अलग केन्द्रों में कार्यकम संचालन की स्थिति में भिन्नता है। जबकि विकल्प के अनुसार सभी कार्यकम केन्द्रों में संचालित किया जाना है। यह समुदाय से जोड़ने, माता–पिता को जागरूक करने महिला मंडली, स्वसहायता समूह को सुदृढ़ करने हेतु आवश्यक है और अनिवार्य उत्तरदायित्व के रूप में माना गया है ताकि अपने केन्द्र को एक अच्छे केन्द्र के रूप में विकसित कर पहचान दिला सके एवं शाला पूर्व शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

पद क07 आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संबंध मे कौन–से कर्तव्य नही है।

प्रस्तुत प्रश्न की प्रकृति अलग है। शोधकर्ता द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया वास्तव में अपने कार्य के प्रति कितने सजग है तथा कोई ऐसा कार्य जो उनके कार्यक्षेत्र में नही है उसकी समझ है अथवा नही अभिमतावली में चार विकल्प यथा मातृपोषण व स्वास्थ्य दिवस मनाना, सामुदायिक ग्रोथ चार्ट का प्रस्तुतीकरण, मेंडिसीन किट से दवाई प्रदान करना, बच्चों का टीकाकरण करना। दिया गया जैसे टीकाकरण विकल्प सही है। इस तरह अभिमतावली के प्रशासन से प्राप्त अभिमत तालिका कमांक – 7 में निम्नानुसार उल्लेखित है –

तालिका कमांक – 7

प्रयोज्य	मातृपोषण एवं स्वास्थ्य दिवस मनाना	सामुदायिक ग्रोथ चार्ट का प्रस्तुतीकरण	मेंडिसीन कोट से दवाई प्रस्तुतीकरण	बच्चों का टीका दोनो करना
50	01	04	40	05

परिणाम एवं निष्कर्ष :–उक्त तालिका से स्पष्ट हैं 01 कार्यकर्ता ने प्रथम विकल्प 05 ने द्वितीय विकल्प 40 ने तृतीय विकल्प एवं 5 ने चतुर्थ विकल्प के संबंध कर्तव्य का निर्वहन न करने के पक्ष में अभिमत किया है। 5 उत्तरदाताओं ने सही अभिमत दिया।

निष्कर्षः– प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है दवाईयो के प्रति उनकी समझ डॉक्टर की तरह नही हो सकती अतः कार्यकर्ता जागरूक नही है। एक सामान्य सी बात है यह कार्य स्वयं नहीं कर सकती। (उत्तर पृ.सं. 163–14–1 आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का पोषण व स्वास्थ्य शिक्षा के संबंध में कर्तव्य)

पद क0 8 कौन–सा वायरस जनित बीमारी है।

पद क011 बाल संदर्भ योजना संबंधित है शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा के साथ–साथ आंगनबाड़ी केन्द्रो में बच्चों हेतु योजना एवं कार्यक्रम चलाये जाते है जिसमें शासन समुदाय महिला बाल विकास की संयुक्त भागीदारी होती है। अतः यह जानना आवश्यक है कि कार्यकर्ता क्या संबंधित योजना की जानकारी रखते है और कियान्वयन परिस्थिति में लाते है। इस संबंध मे प्राप्त अभिमत से इस बात की पुष्टि करने का प्रयास किया गया – 50 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर प्रशासित अभिमतावली के अभिमत निम्नानुसार परिलक्षित हुए –

तालिका कमांक – 11

बाल संदर्भ योजना संबंधित है –

प्रयोज्य	बच्चों के पोषण	बच्चों के कुपोषण	महिलाओं के पोषण	महिलाओं के कुपोषण	अप्राप्त अभिमत	प्राप्त उत्तर का प्रतिशत
50	5	43	निरंक	निरंक	2	86 प्रति.
प्रतिशत	90	86	0	0	4	100 प्रति.

परिणाम एवं निष्कर्षः– उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को बाल संदर्भ योजना बच्चों के कुपोषण से संबंधित है। 86 प्रतिशत कार्यकर्ता इस तथ्य से अवगत है।

भारत में विभिन्न समस्याओं में एक समस्या कुपोषण की है सत्र–2014–15 के अनुसार 5 वर्ष से कम आयु के 46 प्रतिशत बच्चें कुपोषित है तथा छ.ग.में यह दर 52 प्रतिशत है। न्यूज डेस्क नया इंडिया के अनुसार यह एक अच्छी खबर है कि छ.ग. में पांच साल में कुपोषण की दर में 10 प्रतिशत कमी आई है। जी न्यूज 15 अगस्त 2017 के अनुसार भारत मे 12 प्रतिशत बच्चे कुपोषित है जिनकी आयु 5 वर्ष से कम है। राज्य मे 0–5 वर्ष तक आयु समूह के बच्चों में इस बीच कुपोषण मुक्ति के लिए राज्य सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा मुख्यमंत्री सुपोषण मिशन शुरू किया गया। इस मिशन का ध्येय वाक्य 'संकल्प सुपोषण' है। महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रमुखों का कथन है कि उनका विभाग इस कार्य के लिए कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छ भारत मिशन, खाद्य विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण तथा नगरीय प्रशासन विभाग से समन्वय कर विभिन्न योजनाओं के जरिए बच्चों माताओ और किशोरी बालिकाओं की सेहत को बेहतर बनाने के प्रयास किए जा रहे है यह कार्य आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के सहयोग से ही संपन्न किया जा रहा है फलतः यही कारण है 86 प्रतिशत कार्यकर्ता इस योजना से अवगत है।

पद क0 12 शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा क्या है –

तालिका 12

शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा के संदर्भ में प्राप्त अभिमत

प्रयोज्य	6 वर्ष के बच्चों की व्यापक आवश्यकता को पूरा करना	व्यस्क शिक्षा	जनसंख्या शिक्षा	इनमे से कोई नही	अप्राप्त अभिमत	प्राप्त उत्तर का प्रतिशत
50	40	निरंक	निरंक	08	2	80 प्रतिशत
प्रतिशत	80	0	0	16	4	100 प्रतिशत

परिणाम एवं निष्कर्षः–उक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है 80 प्रति कार्यकर्ताओं ने सही उत्तर अर्थात विकल्प कमांक का चयन किया है जबकि 16 प्रतिशत कार्यकर्ताओं विकल्प

परिणाम एवं निष्कर्षः– शाला पूर्व के बच्चों में असीमित क्षमताएँ एवं अपार संभावनाएं होती है तथा सही उत्तर अर्थात विकल्प कमांक का चयन किया है जबकि 16 प्रतिशत कार्यकर्ताओं विकल्प कं. क का चयन किया है। विकल्प एवं ब का चयन किसी भी कार्यकर्ताओं ने नही किया को ध्यान रखना 16 प्रतिशत कार्यकर्ता को भी इस संबंध में अनभिज्ञता नही होना चाहिए। उनका है कि 6 वर्ष के तक बच्चों की व्यापक आवश्यकताओं तथा मानसिक, शारीरिक, सामाजिक विकास की नीव डालना है। जिससे बच्चों में कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, तार्किक क्षमता, प्रत्येक कार्य में सकिय भागीदारी की भावना को साथ ही स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता जैसे गुणों का विकास हो सके। 80 प्रतिशत कार्यकर्ताओं को इस बात की जानकारी होना एक अच्छा संदेश है। ये कार्यकर्ता लम्बी अवधि से इन कार्यो में संलग्न है। संभवतः इस लक्ष्य से अवगत है तथा प्रत्येक बच्चे की अपनी विशिष्टताएं होती है सामान्यतया 3 से 6 आयु समूह के बच्चे एकाग्रचित, जिज्ञासु, कल्पनाशील, कियाशील, सहज, सीखने के इच्छुक, आत्मकेन्द्रित एकाग्रचित गुणों से युक्त होते है। इस बात की जानकारी कार्यकर्ताओं को कितनी है जानने उक्त पदों का प्रयोग किया गया प्राप्त अभिमत से स्पष्ट हुआ कि 29 कार्यकर्ता अर्थात 58 प्रतिशत कार्यकर्ताओं ने शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा के बच्चे एकाग्रचित, उत्सुक, कियाशील, सीखने के इच्छुक होते है। तीनों के आधार मानकर विकल्प चतुर्थ उपर्युक्त सभी चार अपना अभिमत दिया। विकल्प इ एवं ब मे प्रयोज्यो मे दोनो नें अभिमत दिया है। प्रथम विकल्प मे किसी भी प्रयोज्य ने अभिमत नही दिया।

17 प्रयोज्य अर्थात् 34 प्रतिशत प्रयोज्यों ने कियाशीलता एवं 8 प्रयोज्य अर्थात 16 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सीखने के इच्छुक संबंधी विकल्प का चयन किया 3 प्रयोज्यों 6 प्रतिशत ने कोई अभिमत नही दिया। इस संबंध मे जानकारी सभी प्रयोज्यों को होना चाहिए पूछे गए अभिमत बेसिक समझ से संबंधित है यदि हमे अपने ही कार्य की जानकारी इतने वर्षो की सेवा देने के बाद नही है तो हम बच्चों के कैसे समझ पाएंगे। साकार एवं संलग्न महिला एवं बाल विकास अधिकारियों को प्रयोज्यों को पढ़ने प्रशिक्षण लेने हेतु प्रोत्साहित करना होगा।

पद क015 शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा में सम्मिलित गतिविधियां है –

प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर हेतु अभिमतावली 50 प्रयोज्यो पर प्रशासित की गई। प्राप्त परिणाम तालिका कमांक – 15 में दर्शाया गया है –

तालिका कमांक – 15

प्रयोज्य	मुक्त खेल	बच्चे का स्वागत प्रार्थना तथा स्वच्छता जांच	A और B दोनो	इनमें से कोई नही	अभिमत अप्राप्त	प्राप्त अभिमत का प्रतिशत
50	19	निरंक	28	निरंक	3	56 प्रतिशत
प्राप्त अभि. प्रतिशत में	38	07	56		6	100

परिणाम एवं निष्कर्षः– उक्त तालिका से स्पष्ट है 56 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही अभिमत दिया। जबकि 6 प्रतिशत ने अभिमत नही दिया वही 38 प्रतिशत प्रयोज्यों ने केवल मुक्त खेल को गतिविधियों में शामिल होना बताया।

शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा में मुक्त खेल बच्चों का स्वागत, प्रार्थना, शारीरिक, संज्ञानात्मक समझ, सृजनात्मक क्षमता, भाषा, बोली आदि के विकास हेतु गतिविधियां शामिल है। समय सारिणी में इसका स्पष्ट उल्लेख है। 44 प्रतिशत कार्यकर्ताओं द्वारा सही अभिमत नही दिया गया ऐसा विदित होता है इन केन्द्रो में गतिविधियों का संचालन गंभीरता से समय विभाग चकानुसार नही होता। इन कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी के अहसास कराने हेतु सही मॉनीटरिंग की जरूरत है जिससे ये सजग

पोषाहार, स्वास्थ्य पोषण एवं शिक्षा, शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है जानना है। संपूर्ण कार्यकम की जिम्मेदारी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की होती है। प्रयोज्य द्वारा दिए गए अभिमत तालिका कमांक 18 में उल्लेखित है प्रस्तुत अभिमतावली में सही अभिमत विकल्प 'उपरोक्त सभी' d है।

तालिका कमांक –18

प्रयोज्य	टीकाकरण	a स्वास्थ्य जॉच	b पूरक पोषाहार	c स्वास्थ्य+पूरक पोषाहार जांच	d उपरोक्त सभी	अभिमत अप्राप्त	प्राप्त सही अभिमत का प्रतिशत
50	निरंक	1	7	03	34	2	68 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत का प्रतिशत	0	8	14	6	68	4	100

परिणाम एवं निष्कर्षः–उपरोक्त तालिका कमांक – 18 से स्पष्ट है 68 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही अभिमत दिया। जबकि 8 प्रतिशत ने स्वास्थ्य जॉच, 14 प्रतिशत ने पूरक पोषाहार, 6 प्रतिशत स्वास्थ्य जांच एवं पूरक पोषाहार एवं 4 प्रतिशत प्रयोज्यों ने अभिमत नहीं दिया। 32 प्रतिशत कार्यकर्ता अपना स्पष्ट मत अभिव्यक्त नहीं कर पाए यह शोचनीय है कि क्या वास्तव में उन्हे अपने द्वारा किए गए कार्यो की जानकारी नही अथवा वे इस तरह के अनुसंधान को व्यक्तिगत दृष्टि से महत्व पूर्ण नहीं मानते। कई वर्षो से इस दायित्व का निर्वहन कर रहें। विभाग प्रमुख से अपेक्षित है कार्यकर्ताओं को उन्मुखीकरण कार्यकम के माध्यम से उनके कार्य दायित्व के प्रति जागरूक करें।

पद क019 पोषण आहार की आवश्यकता का कारण नहीं है –

प्रस्तुत प्रश्नावली द्वारा अभिमत प्राप्त करने का उद्देश्य कार्यकर्ताओं के सामान्य ज्ञान की परख करना है। पोषण आहार की आवश्यकता का कारण नही है, विकल्प d का विकास करना सही है। प्रयोज्य से प्राप्त अभिमत को तालिका कमांक 4.19 मे दर्शाया गया है।

तालिका कमांक – 19

विकल्प प्रयोज्य	a ऊर्जा प्राप्त करना	b शरीर में वृद्धि एवं विकास करना	c शरीर की रोगो से रक्षा करना	D नैतिकता का विकास करना	अभिमत अप्राप्त	सही सही प्राप्त अभिमत का प्रतिशत
50	निरंक	5	2	39	4	78 प्रतिशत
2.प्राप्त अभिमत का प्रतिशत	0	10	4	78	8	100

परिणाम एवं विश्लेषण–उपरोक्त तालिका में प्राप्त अभिमतावली से स्पष्ट है 78 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही अभिमत प्रदान किया। 14 प्रतिशत प्रयोज्यों ने विकल्प b एवं c पर अभिमत प्रदान किया 8 प्रतिशत प्रयोज्यों ने अभिमत नही दिया। एक सामान्य समझ 14 प्रतिशत कार्यकर्ताओं को भी होनी चाहिए पोषण आहार शरीर की वृद्धि विकास से संबंधित तथ्यात्मक बाते है। जबकि नैतिकता के विकास का उससे संबंध नही है। यद्यपि जैसा खाए भोजन वैसा पाए मन ऐसी बात प्रचलन में है। कार्यकर्ताओं को सामान्य समझ स्वयं के प्रयास

नही कर पाएं प्रशिक्षण संदर्शिका के पृ.क. 39 में पोषण तत्वों के कार्य एवं स्रोत का विस्तृत विश्लेषण दिया गया है। प्रयोज्य गंभीरता से इस बात को ले एवं विभाग प्रशिक्षण समय–समय पर दे। प्रशिक्षण में खानापूर्ति न हो।

पद क022 फोलिक किस पोषण तत्व में पाया जाता है। पोषण तत्वों की प्राप्ति के स्त्रोत के संदर्भ में उक्त प्रश्न के माध्यम से आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से अभिमत प्राप्त किया एवं प्राप्त अभिमत का प्रतिशत के आधार पर गणना की गई। परिणाम निम्नानुसार है–

तालिका कमांक – 4.22

विकल्प	a	b	c	d		
प्रयोज्य	दालें	हरी सब्जी	चावल	रागी	अभिमतावली अप्राप्त	सही अभिमत प्राप्त का प्रतिशत
50	21	23	1	1	4	46 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत प्रति.मे	42	46	2	2	8	100

परिणाम – उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है 23 अर्थात 46 प्रतिशत ने विकल्प a दालें, 01 यथा 2 प्रतिशत ने विकल्प c चांवल 01 यथा 21 प्रयोज्यों ने विकल्प d रागी एवं 23 यथा 46 प्रतिशत प्रयोज्यों ने विकल्प b हरी सब्जी पर अभिमत दिया। दिए गए विकल्प b हरी सब्जी में फोलिक एसिड पाया जाता है सही अभिमत है। जबकि 4 यथा 8 प्रतिशत प्रयोज्य ने अभिमत नही दिया।

निष्कर्ष– रक्त में लाल कोशिकाओं के निर्माण हेतु हमारे शरीर को फोलिक एसिड़ पोषक तत्व की आवश्यकता है इसके नहीं बनने से खून की कमी, हीमोग्लोबिन की मात्रा शरीर में कम हो जाएगी जिससे हम अस्वस्थ हो जाएंगे। हरीसब्जी भाजी एवं लिवर इसका मुख्य स्त्रोत है। 46 प्रतिशत कार्यकर्ताओं ने सही अभिमत दिया है तथा 46 प्रतिशत प्रयोज्यों के अभिमत सही नही है। 8 प्रतिशत प्रयोज्यों से अभिमत प्राप्त नही हुआ। कार्यकर्ताओ को इस बात का संज्ञान होना चाहिए कि स्वास्थ्य, संतुलित आहार इससे मिलने वाले पोषक तत्वों का हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक। 3 से 6 वर्ष के शिशुओं एवं किशोरियों, गर्भवती महिलाओं को इस बात की जानकारी समझ तभी दे पाएंगे जब कार्यकर्ता स्वयं जानकारी रखेंगे।

पद क 023 विटामिन 'ए' का वैज्ञानिक नाम क्या है।

पद कमांक 23 मे पूछे गए प्रश्न के संदर्भ में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के अभिमत द्वारा विटामिन A के वैज्ञानिक नाम को जानने का प्रयास किया गया। प्राप्त अभिमत का प्रतिशत के आधार पर गणना की गई। परिणाम निम्नानुसार प्राप्त हुए–

तालिका कमांक – 23

विकल्प	a	b	c	d		
प्रयोज्य	कैल्सीफेराल	टोफीफेराल	रेटीनाल	स्कार्विक एसिड	अभिमत अप्राप्त	सही अभिमत प्राप्त का प्रतिशत
50	06	04	35	02	03	70 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत प्रतिमे	12	8	70	4	6	100

है कि प्रयोज्य इस बात से भिज्ञ है कि नहीं है। स्वनिर्मित अभिमतावली के प्रशासन से प्राप्त प्रदत्तों के संकलन विश्लेषण से प्राप्त परिणाम निम्नानुसार है।

तालिका कमांक – 25

विकल्प प्रयोज्य	a 1 वर्ष	b 2 वर्ष	c 6 माह	d 2 माह	अभिमतावली अप्राप्त	प्राप्त सही अभिमत प्रतिशत में
50	1	निरंक	45	निरंक	4	90 प्रतिशत
प्रति.	2:	0:	90:	0:	8:	100:

परिणाम – उपरोक्त तालिका में प्रयोज्यों द्वारा अभिमतावली में दिए गए विकल्प के अनुसार प्राप्त अभिमत से स्पष्ट है, 90 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही अभिमत दिया है। 2 प्रतिशत प्रयोज्यों ने विकल्प a का चयन किया एवं 8 प्रतिशत प्रयोज्यों ने अभिमत नही दिया।

विश्लेषण – उपरोक्त प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है कि प्रयोज्य शिशु को पूरक आहार प्रदान करने की उचित उम्र 6 माह है, भिज्ञ है। 10 प्रतिशत प्रयोज्यों को आपसी चर्चा के माध्यम से इस हेतु जानकारी प्राप्त करायी जा सकती है। एक बात स्पष्ट है बहुत कुछ बातें आपसी संवाद से जानी जा सकती है। विचार पूर्ण संवाद अवश्य कार्यकर्ताओं के बीच होना चाहिए समय–समय पर इस तरह की जानकारी हेतु खेल–खेल मे प्रतियोगिता होना चाहिए जिससे बहुत सी जानकारी इन्हें कम प्रयास से प्राप्त हो सकती है।

पद क026 किस बीमारी का टीकाकरण नही होता।

पद कमांक 26 में पूछे गए अभिमत के संदर्भ में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के अभिमत द्वारा टीकाकरण के संबंध में सामान्य जानकारी है कि यह जानने का प्रयास किया गया। सही अभिमत विकल्प a पोलियों है। परिणाम निम्नानुसार प्राप्त हुए।

तालिका कमांक – 26

विकल्प प्रयोज्य	a पोलियो	b हैजा	c टिटनेस	d तपेदिक	अभिमत अप्राप्त	प्राप्त सही अभिमत का प्रतिशत
50	28	19	निरंक	01	2	56 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत	56	38	0	2	4	100

परिणाम – उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है 56 प्रतिशत यथा 28 प्रयोज्यों ने विकल्प a पोलियों में अभिमत दिया जो सही है। जबकि 38 प्रतिशत अर्थात 19 ने विकल्प b हैजा 2 प्रतिशत, ने विकल्प d तपेदिक पर अभिमत दिया। विकल्प c टिटनेस के पक्ष में अभिमत प्राप्त नहीं हुआ। वहीं 2 प्रयोज्यों 4 प्रतिशत ने अभिमत नहीं दिया।

निष्कर्ष – समेकित बाल विकास सेवा परियोजना के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निर्धारित 6 सेवाओं में टीकाकरण, अत्यंत महत्वपूर्ण सेवा है। जिन बच्चों को टीका लगा होता है उनकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है टीकाकरण से बच्चों को 6 जानलेवा बीमारी तपेदिक, गलघोटू, कालीखांसी, टिटनेस, पोलियो, खसरा से बचाया जा सकता है। टीकाकरण कार्यकम जिला अस्पताल, सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों में प्रत्येक मंगलवार को अथवा स्वास्थ्य पोषण दिवस में ए.एन.एम.द्वारा निर्धारित किया जाता है 56 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही अभिमत दिया। प्रयोज्यों को पुनः अपने कार्यो का आंकलन, करना। क्योंकि प्रशिक्षण संदर्शिका के पृष्ठ संख्या 128 अनुप्रमाणिक कमांक 12 के 12.2 में ''पोलियो को छोड़कर सभी प्रकार के टीके इंजेक्शन द्वारा दिये जाते है। उल्लेखित है। साथ ही राष्ट्रीय टीकाकरण अनुसूची में लगने वाले टीके का विस्तृत विवरण है। मीडिया में

पद क029 गर्भावस्था में लगाए गए टिटनेस के दोनो टीकों के बीच कितना अंतराल होना चाहिए। उक्त पद कमांक 29 का सही अभिमत विकल्प d कमांक 1 (1 माह) है। गर्भवती महिलाओं के संबंध में दवाई या टीका मे एहतिहात बरतना बहुत आवश्यक है। अतः क्या कार्यकर्ताओं को इस बात की जानकारी है जानने अभिमत प्राप्त किया गया । प्राप्त अभिमत निम्नानुसार तालिका मे उल्लेखित है–

तालिका कमांक – 29

विकल्प प्रयोज्य	a एक माह	b दो माह	c तीन माह	d 15 दिन	अभिमत अप्राप्त	प्राप्त सही अभिमत प्रतिशत
50	33	11	4	निरंक	2	66 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत प्रति. में	66	22	8	0	4	100

परिणाम – तालिका कमांक 4.29 मे प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 33 प्रयोज्यों यथा 66 प्रतिशत ने सही अभिमत विकल्प a एक माह का चयन किया,11 प्रयोज्य (22 प्रतिशत)

तालिका कमांक – 30

विकल्प प्रयोज्य	a ग्रीष्म	b शीत	c सामान्य	d कोई नही	अभिमत अप्राप्त	प्राप्त सही का प्रतिशत	अभिमत
50	निरंक	47	निरंक	1	2	94 प्रतिशत	
प्राप्त अभिमत प्रति. में	0	94	0:	2	4	100	

परिणामः– उपरोक्त तालिका में दर्शायें गए प्रयोज्यों से प्राप्त अभिमत से स्पष्ट होता है। 47 प्रयोज्य 94 प्रतिशत मे विकल्प b शीत श्रृंखला पर अपना अभिमत प्रस्तुत किया जबकि a एवं c विकल्प ग्रीष्म एवं सामान्य श्रृंखला पर किसी भी प्रयोज्य ने सहमति नही दर्शायी इसी तरह 2 प्रयोज्यों 4 प्रतिशत ने अभिमत ही नही दिया 1 प्रयोज्य यथा 2 प्रतिशत ने विकल्प d का चयन किया।

विश्लेषण – टीके को सुरक्षित रखने हेतु संचार की चुस्त व्यवस्था, साधनों का होना वैक्सीन की सुरक्षा के लिए आवश्यक है नही तो टीके देने योग्य नही रहेंगे। सभी टीको की शीत श्रृंखला बनाये रखना जरूरी है। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जहां से टीके प्राप्त किये जाते है से टीका लगाने तक एवं टीकाकरण के समय भी टीके की शीशी को आईस पैक या बर्फ पर रखना होता है। 94 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही अभिमत दिया। कार्यकर्ता इस बात से अवगत है यह टीकाकरण के प्रतिसकारात्मक सोच को प्रदर्शित करता है। पद क्रमांक 31तपेदिक के बचाव के लिए कौन–सा टीका लगाया जाता है।

भारत वर्ष में आज भी बहुत लोग तपेदिक की बीमारी से ग्रस्त है। रोग की यदि जल्दी पहचान नहीं हुई तो व्यक्ति/बच्चा कमजोर, कुपोषित हो जाते हैं। प्रयोज्यों का दृष्टिकोण इसके प्रति क्या है जानने अभिमतावली में पद क.31 का प्रयोग किया गया। परिणाम निम्नानुसार प्राप्त हुए –

केवल 22 प्रयोज्य यथा 44 प्रतिशत प्रयोज्य ने ही सही अभिमत दिया जबकि 24 प्रयोज्य 48 प्रतिशत ने सही अभिमत नही दिया। कार्यकर्ताओं का जवाब उनके कार्य के प्रति कितने गंभीर इसे प्रकाशित करता है। विभाग, प्रशिक्षण देने वाले स्त्रोत पुरूषों को भी इसे ध्यान रखना होगा। प्रयोज्यो ंको स्वयं इसके प्रति सचेत, सजग रहने की जरूरत है।

पद क033 महिलाओं को टिटनेस का बुस्टर टीका कब दिया जाता है।

पद कमांक 33 में पूछे गये प्रश्न द्वारा टिटनेस के बुस्टर टीका कब लगायी जाती है यह जानना है। अभिमतावली ने प्रशासन से परिणाम निम्नानुसार प्राप्त हुए –

तालिका कमांक – 33

विकल्प प्रयोज्य 50	a 11	b 10	c 19	d 7	अभिमत अप्राप्त 3	प्राप्त सही अभिमत प्रतिशत 38 प्रतिशत
पद कमानुसार प्राप्त अभिमत	22	20	38	14	6	100

परिणाम – उक्त तालिका में उल्लेखित परिणाम से स्पष्ट है 11 प्रयोज्य 22 प्रतिशत ने विकल्प a 20 प्रतिशत ने विकल्प b 38 प्रतिशत ने विकल्प c तथा 7 प्रयोज्य 14 प्रतिशत ने विकल्प क का चयन किया। केवल 19 प्रयोज्य अर्थात 38 प्रतिशत ने सही अभिमत दिया।

विश्लेषण – भारत में टिटनेस के कारण नवजात शिशुओं की मृत्यु का बड़ा कारण है। अतः गर्भवती महिला को समय पर टीके लगवाना चाहिए। केवल 19 यथा 38 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही अभिमत दिया यह चिंतनीय पहलू है। कार्यकर्ताओं की सजगता का परीक्षण विभाग द्वारा समय–समय पर अवश्य किया जाना चाहिए। यदि गर्भवती महिला का दूसरा प्रसव है तथा पहले प्रसव और दूसरे गर्भ के बीच 3 वर्ष के कम का अंतराल है तो दूसरी गर्भावस्था में टिटनेस का एक ही टीकाकरण पर्याप्त हो इसे टिटनेस का बुस्टर टीका कहते है। टीकाकरण में संदर्भ में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को जच्चा–बच्चा की पूरी जानकारी तथा टीकाकरण की तिथि अभिलेख में संधारित करना होता है अतः गृह संपर्क, मोहल्ला, ग्राम पंचायत, महिला मंडल, मातृ समितियों की बैठक में जानकारी के एवं वार्ड पंच ग्राम पंचायत की बैठकों में टीकाकरण लगाने की जिम्मेदारी सुनिश्चित करे। इस बात का गंभीरता से पालन हो। कार्यकर्ता की अनभिज्ञता एवं कार्य के प्रति उदासीनता से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। साथ ही स्वयं गर्भवती महिलाओ को सशक्त बनावे ताकि वे भी सजग हो जावे।

पद्र क034 टीकाकरण रजिस्टर के कितने भाग होते हैं।

प्रस्तुत अभिमतावली के प्रशासन से प्रयोज्यों द्वारा प्राप्त अभिमत निम्नानुसार प्राप्त हुए है –

तालिका कमांक – 34

विकल्प प्रयोज्य 50	a तीन 14	b दो 18	c चार 9	d पांच 4	अभिमतावली अप्राप्त 5	प्राप्त सही अभिमत प्रतिशत 36 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत का प्रतिशत	28	36	18	8	10	100

परिणाम – उपरोक्त तालिका के प्राप्त अभिमतो के विश्लेषण से स्पष्ट है 14 अर्थात 28 प्रतिशत प्रयोज्यों ने विकल्प a (तीन भाग) 18 प्रयोज्य 36 प्रतिशत ने सही विकल्प b दो भाग 9 प्रयोज्य 18 प्रतिशत ने विकल्प c चार भाग व प्रयोज्य 4–8 प्रतिशत ने विकल्प क पांच भाग तथा प्रयोज्य 10 प्रतिशत कोई अभिमत नही दिया।

विश्लेषणः– प्रशिक्षण संदर्षिका पृ.सं. 134 के तृतीय बिन्दुओं मे उल्लेख है कि टीकाकरण

पद क037 केन्द्र में हितग्राही सेवा के अन्तर्गत किशोरी बालिकाओं 11 वर्ष से अधिक एवं 18 वर्ष से कम हेतु कौन सी सेवाएँ प्रदान की जाती है।

उक्त प्रश्नानुसार अभिमत प्राप्त किया गया। प्रयोज्यों से प्राप्त अभिमत निम्नानुसार तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका कमांक – 37

विकल्प प्रयोज्य 50	a 9	b 14	c –	d 24	अभिमत अप्राप्त 3	प्राप्त सही अभिमत प्रतिशत 48 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत का प्रतिशत	18	28	0	48	6	100

परिणाम – प्रयोज्य से प्राप्त अभिमत कमशः विकल्प a मे 9 प्रयोज्य 18 प्रतिशत विकल्प b 14 प्रयोज्य यथा 28 प्रतिशत विकल्प c मे कोई अभिमत प्राप्त नही हुए विकल्प d मे 24 प्रयोज्य यथा 48 प्रतिशत ने सही अभिमत दिया। 3 प्रयोज्य यथा 6 प्रतिशत ने अभिमत नही दिया।

विश्लेषण – सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है। कि 24 प्रयोज्यों यथा 48 प्रतिशत ने सही अभिमत प्रदान किया। 46 प्रतिशत प्रयोज्यो को इस बात की जानकारी नही है कि हितग्राही सेवा के अंतर्गत किशोरी बालिकाओं 11 वर्ष से अधिक एवं 18 वर्ष से कम हेतु भी टीकाकरण एवं स्वास्थ्य जॉचं, पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा, घर, गृहस्थी की सेवायें प्रदान की जाती है प्रयोज्यों ने गंभीरता से इस तथ्य को लिया ही नहीं। इन्हें सजग करने हेतु प्रशिक्षण प्रकिया को सतत्, गुणवत्ता मूलक, बनाने एवं सतत् मानीटरिंग की आवश्यकता है। प्रशिक्षण संदर्शिका पृष्ठ क. 185 के अनुसार योजना के कियान्वयन हेतु किशोरी बालिकाओं का सर्वे, प्रशिक्षण, किशोरी दिवस का आयोजन सार्वजनिक सेवाओं की जानकारी मार्गदर्शन, किशोरी समूह का गठन प्रशिक्षण जैसे बिन्दुओं को उल्लेखित किया गया है। पूर्व में ही योजना के उद्देश्य के अन्तर्गत पृ.सं. 184 मे किशोरवय के शारीरिक, मानसिक बदलावों के संबंध में जानकारी, स्वास्थ्य, पर्यावरणीय, स्वच्छता पोषण, अनौपचारिक शिक्षा जीवन कौशल यथा नेतृत्व, वार्तालाप, समस्या समाधान, स्वसजगता कौशल उन्नयन, सामाजिक कुरीति के प्रति जागरूकता लिंग में भेद जैसे उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है। कार्यकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे कर्तव्य को सही ढंग निर्वहन करे एवं विभाग प्रमुखों द्वारा सही समय पर सही तरीके से सहयोग प्राप्त हों।

पद क038 ECCE दिवस के द्वारा किस मुख्य उद्देश्य की पूर्ति होती है।

उपरोक्त प्रश्न के अभिमत प्राप्त करने हेतु अभिमतावली का प्रशासन आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर किया गया। प्राप्त अभिमत की गणना प्रतिशत के आधार पर की गई गणना से प्राप्त परिणाम निम्नानुसार तालिका कमांक 4–38 मे दर्शाया गया है।

तालिका कमांक – 38

विकल्प प्रयोज्य 50	a 14	b 2	c 30	d 1	अभिमत अप्राप्त 3	प्राप्त सही अभिमत का प्रतिशत 60 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत का प्रतिशत	28	4	60	2	6	100

परिणाम – (अर्ली चाइल्ड हुड केयर एण्ड एजुकेशन) ECCE दिवस मनाने से माता पिता से भेंट स्थानीय लोगों की सहभागिता दोनो उद्देश्यों की पूर्ति होती है। 30 प्रयोज्यों अर्थात् 60 प्रतिशत प्रयोज्यों ने सही विकल्प c का चयन किया जबकि 14 प्रयोज्य 28 प्रतिशत ने विकल्प a, 2 प्रयोज्यों 4 प्रतिषत ने विकल्प b 1 प्रयोज्य 2 प्रतिशत ने विकल्प d पर अभिमत दिया तथा 3 प्रयोज्य 6 प्रतिशत ने कोई अभिमत नही दिया।

बाल संरक्षण गृह c शासकीय झूलाघर d बालवाड़ी सहसंस्कार केन्द्र का चयन किया गया चारो शासकीय संस्थाओं के अलावा मातृकुटीर बच्चों के लिए भी संचालन किया जाता है। प्रयोज्यो को चारो विकल्पों का चयन किया जाना चाहिए। परंतु प्रदत्त संकलन से परिणाम निम्नानुसार प्राप्त हुए।

करने के लिए विशेष सुविधाओं वाली शासकीय संस्थाओं का संचालन किया जाता है। नारी निकेतन जहाँ 16 वर्ष से अधिक आयु की अनाथ कन्याओं, विधवा, निराश्रित, परित्यक्ता, अविवाहित माताओं तिरस्कृत, बेसहारा, समाज से प्रताड़ित महिलाओं हेतु निःशुल्क आवास, पोषण, शिक्षण, प्रशिक्षण की व्यवस्था 50–50 बालक बालिका के लिए किया जाता है।

तालिका कमांक – 40

विकल्प प्रयोज्य	a	b	c	d	अभिमतावली अप्राप्त	प्रयोज्यो से प्राप्त सही अभिमत प्रतिशत	सही अभिमत प्राप्त का प्रति.
50	11	33	25	17	3	2 प्रतिशत	4 प्रति.
प्राप्त अभिमत का प्रति.	22	66	50	34	6	100	

परिणाम – उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है। 11 प्रयोज्य 22 प्रतिशत मे विकल्प a नारी निकेतन 33 प्रयोज्य 66 प्रतिशत मे शासकीय बाल संरक्षण गृह विकल्प b 25 प्रयोज्य 50 प्रतिशत ने विकल्प c शासकीय झूलाघर, 17 प्रयोज्य 34 प्रतिशत ने विकल्प d बालवाड़ी सहसंस्कार केन्द्र के संबंध में अभिमत दिया केवल 2 प्रयोज्य 4 प्रतिशत सही विकल्पों का चयन किया।

विश्लेषणः– उपरोक्त परिणामों के आधार पर विश्लेषण से स्पष्ट होता है। 96 प्रतिशत कार्यकर्ताओं ने सही अभिमत नही दिया केवली 4 प्रतिशत प्रयोज्य ही सही अभिमत के पाए। इस पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह कार्यकर्ताओं की कार्य प्रणाली पर उठता है। पर्यवेक्षक एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की प्रशिक्षण संदर्शित के पृ.क. 193 मे उल्लेख है कि विभाग द्वारा महिला एवं बच्चों को विशेष संरक्षण प्रदान शासकीय झूलाघर मे मध्यम आय वर्ग के कामकाजी महिलाओं 6 माह से 6 वर्ष के बच्चों के लिए व्यवस्था होती है। बालवाड़ी सहसंस्कार केन्द्र में 06 वर्ष आयु के बच्चों के मानसिक व शारीरिक विकास हेतु केन्द्र संचालित है। केन्द्र द्वारा महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी तरह मातृकुटीर मे निराश्रित महिला को एक साथ एक परिवार के रूप में गठित करके परिवारिक वातावरण निर्मित करने एवं आवश्यक सुंविधाएं प्रशिक्षण की व्यवस्था है। प्राप्त अभिमत से बहुत से सवाल उठते है। जो शोध विषय है।

प्र041 सक्षम योजना बनायी गई है। विवाहित महिलाओं, अविवाहित महिला, विधवा, परित्यक्ता या बच्चों के विकास के लिए उपरोक्त के संदर्भ में अभिमत प्राप्त किया गया परिणाम निम्नानुसार प्राप्त हुए।

तालिका कमांक – 41

विकल्प प्रयोज्य	a	b	c	d	अभिमतावली अप्राप्त	प्रयोज्यो से प्राप्त सही अभिमत प्रतिशत
50	–	–	46	–	4	92 प्रतिशत
प्राप्त अभिमत का प्रति.	0	0	92	0	8	100

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं के लिए संदर्शिका (1987): महिला एवं बाल विकास विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार।
2. आंगनबाड़ी समाचारिका (1997): महिला एवं बाल विकास विभाग का प्रकाशन।
3. अनुराधा के. एन. एन्ड कोमला एम. (2003): पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु आंगनबाड़ी केन्द्र की अधोसंरचना सुविधाओं के प्रभाव का अध्ययन।
4. गीता के. (1999): "तिरूपति आई सी डी एस परियोजना के अन्तर्गत शहरी बस्ती क्षेत्र में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं बच्चों की देखभाल करने वाले एजेन्ट के ज्ञान और योग्यता का अध्ययन करना। पी. एच. डी. होम, एस. सी. श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय।
0 गुप्ता, पुष्पा, मारडिया, अल्का (1995): आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के सम्प्रेषण करन के व्यवहार का अध्ययन।
0 खोशला रेनू (1991): आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं हेतु दिये जाने वाले पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम का मूल्यांकन। पंच सर्वे शिक्षा अनुसंधान वाल्यूम–II
0 कुमारी पी. (1991): "आई सी डी एस कार्यक्रम के सन्दर्भ में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का उनकी व्यसाय में संलग्नता, व्यक्तित्व विकास एवं उनके कार्यों के निष्पादन का अध्ययन।" पंचम सर्वे शिक्षा अनुसंधान वोल्यूम–II
0 किट्ज (1998): "आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के ज्ञान का बच्चों के विकास पर प्रभाव।"
0 मेहता आर. डी. (2002): "शाला पूर्व शिक्षा में आंगनबाड़ी केन्द्र के महत्व का अध्ययन।"
0 मुर्ति, वी (1992): "पूर्व प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के अध्ययन पर शोध"। पी. एच. डी. एजुकेशन यूनिवर्सिटी आफ बाम्बे। पंचम सर्वे शिक्षा अनुसंधान वोल्यूम–II
0 मितानीनः छत्तीसगढ़ लोक भाषा में महिला सशक्तिकरण विधिक साक्षरता एवं जनजागरण अभियान पुस्तिका।
0 नवाजतनः कुपोषित बच्चों के सामुदाय आधारित प्रबंधन की संदर्भ पुस्तक।
0 नाथन स्वामी मीना (2009): बच्चों के लिए खेल क्रियाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया।
0 प्रतिनिधि, ए. के. (1998): "पुणे शहर में डाइट के द्वारा आई सी डी एस कार्यक्रम कावर्सेक्षयण किया।" पंचम सर्वे शिक्षा अनुसंधान वोल्यूम–II
0 परीक्षा संदर्षिका (2014): महिला एवं बाल विकास के पर्यवेक्षक पद हेतु आयोजित परीक्षा के लिए।
0 शुक्ला अविनाश (1911): "सामाजिक चेतना से कुपोषण मुक्ति।"
0 सौजा, डी. पी. एवं मेजिक, टी. वी. (2001): "आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के समस्याओं के अध्ययन के संदर्भ में।"
0 सरस्वती (2010): "बंग्लोर ग्रामीण समुदाय में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों में चयनित चाइल्ड केयर गतिविधियों के सन्दर्भ में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के ज्ञान एवं।
0 सेठ अर्चना राना (2012): अंगना को गोठ, महिला एवं बाल विकास विभाग की पत्रिका।
0 शिशु शिक्षा एवं देखभाल (उड़ान): आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के लिए हस्तपुस्तिका।
0 ठाकरे, मिन, एम. एवं कुरिल, वी. एम. नवीन के (2006): आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के प्रोफाइल को अध्ययन उनके ज्ञान का एवं समस्याओं का अध्ययन जो उनको अपने कार्यस्थल में आती है।"
0 विश्वकर्मा अनीता (2012): "आंगनबाड़ी केन्द्रों में शिक्षण अधिगम सामग्री की उपयोगिता एवं प्रभावशीलता का अध्ययन।" एम. एड. लघु शोध, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)।

2. विद्यार्थियों का गणित विषय के प्रति रूचि तथा समस्या का पता लगाना।

3. कक्षा में विद्यार्थियों की निरसता, थकान, निष्क्रियता को समाप्त कर उन्हें सक्रिय करने में गणित की भूमिका का अध्ययन।

4. शाला में विद्यार्थियों के नियमित उपस्थिति की निरंतरता को बनाये रखने में गणित की भूमिका का अध्ययन।

शोध परिकल्पनाऐं :–

(Ho_1) परंपरागत् विधि द्वारा शिक्षण से नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्व तथा पश्च परीक्षण के परिणामों में सार्थक अंतर नही है।

(Ho_2) सक्रिय अधिगम प्रविधि द्वारा शिक्षण से प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्व तथा पश्च परीक्षण के परिणामों में सार्थक अंतर नही है।

(Ho_3) परंपरागत् विधि तथा सक्रिय अधिगम प्रविधि द्वारा शिक्षण पश्चात् शैक्षिक उपलब्धि के पश्च परीक्षण के परिणामों में सार्थक अंतर नही है।

शोध विधि :–

इस शोध अध्ययन में प्रकृति के अनुसार प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में के मुंगेली वि.खं. के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्च प्राथ. शालाओं में सत्र 2017–18 में अध्ययनरत् कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया गया है। चयनित शालाओं का विवरण निम्नलिखित है–

शोध चरः–

1) स्वतंत्र चर – सक्रिय अधिगम प्रविधि

2) आश्रित चर – गणित शिक्षण की प्रभावशीलता

1.8 शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न स्वनिर्मित शोध उपकरण का प्रयोग किया गया।

1.8.1 स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण–

व कक्षा 8वीं (हिंदी माध्यम) के विद्यार्थियों के लिए गणित विषय के पाठ्यक्रम के आधार पर निर्मित किया गया है। प्रश्नों का निर्माण करते समय विद्यार्थियों की आयु, कक्षा स्तर, समय, परिवेश आदि का विशेष ध्यान रखते हुए परीक्षण के एकांशो का निर्माण किया गया है व कुल चयनित 40 प्रश्नों को लेकर परीक्षण का अंतिम प्रश्न पत्र शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के लिए तैयार किया गया। प्रत्येक पद पर सही उत्तर के लिए 1–1 अंक निर्धारित किया गया है।

शोध निष्कर्षः–

परिकल्पना क्र. 01– परंपरागत् शिक्षण

चयनित शालाओं का विवरण

क्र.	विद्यालय का नाम	स्थान	न्यादर्श		कुल छात्र
			प्रायोगिक समूह	नियंत्रित समूह संख्या	
1.	शास. पूर्व माध्य. शाला नेवासपुर	ग्रामीण	00	30	30
2.	शास. पूर्व माध्य. शाला करूपान	ग्रामीण	30	00	30
		योग	30	30	60

सारणी क्र. 1

विवरण	न्यादर्श संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	सहसंबंध गुणांक	टी मान	सार्थकता स्तर	सारणीगत मान
नियंत्रित समूह (पूर्व परीक्षण)	30	22.03	4.82	29	0.34	10.57	0.10	1.66
नियंत्रित समूह (पश्च परीक्षण)	30	30.97	2.55				0.02	2.35

समर्थ हुए तथा गणितीय बातों को सूक्ष्मता के साथ ग्रहण करने में समर्थ हो गये। सक्रिय अधिगम प्रविधि के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता, रूचि, व्यावहारिक ज्ञान तथा सृजनशीलता बढ़ती है। बच्चों में आपस में मिलकर सीखने की आदत पड़ती है।

परिकल्पना क्र. 03– परंपरागत् शिक्षण तथा सक्रिय अधिगम प्रविधि द्वारा शिक्षण पश्चात् शैक्षिक उपलब्धि के पश्च परीक्षणों के माध्य में सार्थक नहीं अंतर है।

तालिका क्रमांक 3

पश्च परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि का विवरण

निष्कर्ष– स्पष्ट है कि पश्च परीक्षण में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का माध्य 33.40 है। नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के माध्य 30.97 से अधिक है। अतः माध्य के आधार पर दोनों समूहों के पश्च परीक्षण से प्राप्त प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है।

विवेचना एवं सुझाव– पश्च परीक्षण में नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की सीखने के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाया गया। प्रायोगिक समूह के बच्चे सक्रिय अधिगम प्रविधि के आयाम जैसे– समूह चर्चा, खेल–खेल में सीखना, भ्रमण, अवलोकन आदि से अध्ययन कर शिक्षक से बिना डरे अपने समस्याओं को पूछा। विद्यार्थी अध्ययन में उत्साहित दिखें। जबकि परंपरागत विधि से अध्यापन कराने के कारण विद्यार्थियों की अध ययन के प्रति मौलिक अभिरूचि में परिमार्जन नहीं हो पाया।

अतः परंपरागत विधि से शिक्षण के अलावा विद्यार्थियों को सक्रिय करके, नवीनतम टीएलएम का प्रयोग के साथ शिक्षण दिया जाना उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। तथा अपेक्षित परिणामों की प्राप्ति हेतु आवश्यक हैं कि अध्यापन की विधि रूचिकर एवं स्फुर्तिदायक हो जिससे कि उनमें मौलिक चिंतन के गुणों का विकास हो सकें।

1. प्रयोग विधि तथा बालकेन्द्रित शिक्षण विधियों जैसे स्वअनुदेश सामग्रियों आदि के साथ सापेक्ष प्रभाविता का अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रायोगिक कार्यों के द्वारा विद्यार्थियों में गणितीय योग्यताओं को आसानी से स्थानांतरित किया जा सकता है जिससे शिक्षकों को कम प्रयासों में अधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।
3. अपने विद्यालय के गणित शिक्षकों को अभिप्रेरित करें कि वे गणित विषय में कुछ प्रकरणों के अध्यापन हेतु व्याख्यान विधि के अतिरिक्त प्रयोग विधि का प्रयोग करें।
4. शिक्षक वास्तविक पदार्थों, प्रतिमानों चार्ट आदि की सहायता से प्रायोगिक गतिविधियां आयोजित कर गणित कक्षा की एकरसता, गणित के प्रति भय तथा गणित शिक्षक की रुढ़िबद्ध सख्त छवि को बदल सकता है।

"प्रलेखों के डिजिटल संरक्षण में सॉफ्टवेयरों एवं संस्थाओं की भूमिका"

शोध निर्देशक
डॉ. संगीता सिंग
डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय
कोटा, बिलासपुर

पी. एच. डी. शोधार्थी
मंजुला जैन
डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय
कोटा, बिलासपुर

सारांश

आज वैश्वीकरण (ग्लोबलाइज़ेशन) के दौर में ज्ञान के परस्पर आदान–प्रदान व परस्पर सहभागिता की महती आवश्यकता है। विश्व के विभिन्न देशों में हो रहे अनुसंधान और विकास के नवीनतम अभिलेखों,प्रलेखों की प्राप्ति डिजिटलाइजेशन और डिजिटल संरक्षण से ही संभव है। पुस्तकालय के भौतिक स्वरूप के बजाए आभासी पुस्तकालय (वर्चुअल लाइब्रेरी) वर्ष भर चौबीसों घंटे उपभोक्ताओं के ज्ञान में अभिवृद्धि के लिए और ज्ञान संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपलब्ध है। लघु आकार, असीमित भंडारण क्षमता, दीर्घकाल तक संरक्षित रखने, आसान पहुंच, कम लागत के कारण डिजिटलीकरण आवश्यक हो गया है। न सिर्फ परंपरागत भौतिक स्वरूपों का बल्कि डिजिटलीकृत सामग्री को भी दीर्घकाल तक उपयोग के अनुरूप सुरक्षित रख पाना भी दोहरी चुनौती है।

प्रस्तावना

तकनीकी कांति के साथ भारत सहित विश्व भर में पुस्तकालयों और व्यवसायों की कागजों भरी दुनिया में एक नई रोशनी आई। प्राचीन प्रलेखों और उनके प्रकारों के रखरखाव और संरक्षण के तरीकों को नया आयाम मिला। दुर्लभ ग्रंथों को नए सुरक्षित तरीकों से सर्वसुलभ बनाया जा रहा है तथा उनकी दुर्लभ उपलब्ध ाता को आसानी से सभी तक पहुंच योग्य बनाया जा रहा है। प्रलेखों को डिजिटल रूप में परिवर्तित करके जीवनभर के लिए उन्हें सुरक्षित रखा जा सकता है। तकनीकी क्षेत्र में आए कांतिकारी परिवर्तन के कारण ही प्रलेख ऑडियो, वीडियो, ई–मैग्जीन्स् सहित सभी तरह के इलेक्ट्रॉनिक फॉरमेट्स में आज संरक्षित रखे जा रहे हैं जिसे किसी भी मीडिया पर कहीं भी स्थानांतरित किया जा सकता है और उपलब्ध कराया जा सकता है। साथ ही डिजिटाइज्ड फॉरमेट्स को आसानी से क्लोन किया जा सकता है, एक्सेस किया जा सकता है और संरक्षित किया जा सकता है। आवश्यकतानुरूप आसानी से पुनर्प्राप्त और अपडेट किया जा सकता है। की–वर्ड्स का प्रयोग कर अल्प समय में ही खोजा जा सकता है। डिजिटलीकरण के लिए और प्रलेखों के संरक्षण के लिए कई तरह की संस्थाओं और पुस्तकालयों में कार्य किया जा रहा है। स्ववित्तीय आधार पर एवं शासन की कई परियोजनाओं के माध्यम से कई तरह के उपकरणों, सॉफ्टवेयरों व तकनीकों का प्रयोग कर इस दिशा में कार्य किया जा रहा है।

प्रलेखों के सरंक्षण में प्रयुक्त सॉफ्टवेयर्स

प्रलेख से अभिप्राय उन सभी प्रारूपों से है जिसमें ज्ञान व सूचनाएं संग्रहित होती है। जिनमें मुद्रित, हस्तलिखित या अन्य किसी रूप में पाठ्यसामग्री से है जिसमें पुस्तकें, पांडुलिपियां,पत्र–पत्रिकाएं, फोटोग्राफ्स, माइक्रोफिल्म्स, ग्रामोफोन, रिकॉर्ड्स आदि शामिल हैं। अपने बुद्धि कौशल द्वारा अर्जित ज्ञान व्यक्तिगत स्तर पर, बुद्धिजीवी वर्ग व राष्ट्रीय निधि के रूप में यह बहुपयोगी साबित हो सकता है । जिसे सहेजने, संरक्षित रखने और आसान उपलब्धता प्रदान करने के लिए आज बहुत से सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार है –

प्रेर्वीका – डिजिटल संरक्षण में विश्व में अग्रणी है तथा सुरक्षित,पहुंच योग्य और पठनीय होने तथा डिजिटल संग्रह को भविष्य की पीढ़ियों

जिसे स्कैन किया गया और अधिकांश पुस्तकें सार्वजनिक डोमेन पर उपलब्ध है।

भारत में 22 स्कैनिंग केंद्र विभिन्न स्थानों पर चार नोडल केंद्रों के साथ विभिन्न स्थानों पर चल रहा है जिनमें इलाहाबाद, गोवा, पुणे, नई दिल्ली, हैदराबाद आदि शामिल है।

ई.आर.नेट.इंडिया की डिजिटल लाइब्रेरी : शिक्षा और अनुसंधान नेटवर्क द्वारा आयोजित डिजिटल लाइब्रेरी (ईएनएनईटी) – विभिन्न भारतीय और अमेरिकी संस्थानों के बीच एक सहयोगी प्रयास है। इसमें तकनीकी में शामिल है, ई–पुस्तकों के रूप में अच्छी तरह से कला और मानविकी साहित्य,जो खोज योग्य या पढ़ने योग्य है। एक लाख से अधिक पुस्तकें पहले से डिजिटल की जा चुकी हैं और हर किसी के लिए सुलभ हैं।

सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग (सी–डीएसी) डिजिटल लाइब्रेरी प्रोजेक्ट्सः सी–डैक – भारत में उपलब्ध दुलर्भ पांडुलिपियों को डिजिटाइज करने के लिए विशष एजेंसी के रूप में जाना जाता है।

खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी,पटना – पांडुलिपियों को सरंक्षण प्रदान करने हेतु डिजिटिल लाइब्रेरी बनाई है।

पारंपरिक ज्ञान डिजिटल पुस्तकालय (टीकेएलडी) – राष्ट्रीय संस्थान के सहयोगी प्रयास हैं।

ईटीडी – डिजिटल लाइब्रेरी का एक रूप है जो विभिन्न संस्थानों, अनुसंधान केंद्रों और विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है।

इसी तरह – भारतीय विज्ञान संस्थान, लाइब्रेरी और सूचना विज्ञान (डीएलएल) की डिजिटल लाइब्रेरी दस्तावेजीकरण और अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (डीआरटीसी) बैंगलोर,सूचना का डिजिटल लाइब्रेरी और लाइब्रेरी नेटवर्क केंद्र (INFLIBNET), भारतीय प्रबंधन संस्थान, कोझीकोड में डिजिटल लाइब्रेरी, कालीकट विश्वविद्यालय के नेशनल इंस्टीट्यूट में डिजिटल लाइब्रेरी, शामिल हैं।

में लम्बाई, क्षेत्रफल, आयत सहज नहीं समझ सकते है।

यदि विद्याथियों को बिन्दु, रेखा, त्रिभुज, आयत, वर्ग आदि की संकल्पनाएं सहज मालूम नहीं हो सकती है। इसी प्रकार विद्यार्थी बीजीय राशियों के जोड़ गुणा भाग आदि की समस्या को दक्षता के साथ हल नहीं कर सकते।

गणित की प्रकृति एवं संरचना की निम्नलिखित विशेषताएं है।

1. गणित की भाषा अंतर्राष्ट्रीय है।
2. गणित विषय की विषयवस्तु का अध्ययन विश्व के सभी विद्यालयों में समान रूप से पढ़ाई की जाती है।
3. गणित में संक्रियाओं, क्षेत्रफल मापन आदि का अध्ययन किया जाता है।
4. गणित में अमान्यीकरण निगमन आयतन, आदि मानसिक क्रियाओं की सहायता से सिद्धांतों प्रक्रियाओं सूची आदि को गणितीय भाषा को प्रकट किया जाता है।
5. गणित विषय वस्तु व्यवस्थित है।
6. गणित सीखाने हेतु निश्चित ही अवधारणा को आधार माना जाता है। प्रत्येक पद को सम्मुख करके ही आगे बढ़ाया जाता है।
7. गणित में अभ्यास हेतु छात्रों के समक्ष समस्याएं प्रस्तुत की जाती है तथा उनको हल करने में सूत्रों सिद्धांतों की मदद ली जाती है तथा उनको प्रत्यक्ष प्रयोग किया जाता है।
8. गणित मे तथ्य निश्चित तथा तर्कसंगत है।
9. गणित की विषय वस्तु में सामन्जस्यता है।
10. यह एक अमूर्त विषय है गणित को अमूर्त विचारों एवं तथ्यों का विज्ञान कहा जाता है।

1.3 गणित का महत्व–

एक शिशु की मानसिक तथा बौद्धिक प्रकृति उसके इर्द–गिर्द व्याप्त वातावरण मे पुष्पित एवं पल्लवित होती है। सभी बालकों का मानसिक विकास समान होता है। यही कारण है जिनकी बौद्धिक प्रतिभा औसत से अधिक होने के कारण वे आगे बढ़ जाते है। वही कुछ औसत से कम होने के कारण वे पीछे रह जाते हैं।

लेकिन गणित की षिक्षा मनोविज्ञान तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा लगन एवं परिश्रम द्वारा औसत से कम वर्ग का भी बौद्धिक सृजन शक्ति का विकास सम्भव है, गणित तथा मानव का सम्बंध आदिकाल से रहा है। मानव जाति की उन्नति तथा समय के विकास मे गणित का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गणित का इतिहास साक्षी है कि मानव की प्रगति गणित विषय के विस्तार एवं चिंतन के साथ जुड़ी हुई है।

गणित की महत्ता को स्वीकार करते हुए वैज्ञानिकों ने अपने मत निम्नानुसार दिये है–

1. गणित सभ्यता और संस्कृति का पर्याय है। गणित सभी विषयों का सिद्धांत और कुंजी है।
2. गणित मस्तिष्क को कुशाग्र और तीव्र बनाने में सही काम करता है यह मस्तिष्क को तेज करने वाला पत्थर है। इसके अध्ययन से स्पष्टता तर्क संगतता एवं क्रमबद्धता से भली भांति सोचनी की शक्ति आती है।
3. नवीन गणित में भविष्य की समस्याओं को हल करने की क्षमता है। भावी युग कम्प्यूटर के अधीन है। हमें व्यक्तियों की आवश्यकता है जो इसके लिए एक विशिष्ट कार्य कर सकते हैं। जोल्टन डाकन्सस

अतः हम कह सकते हैं कि गणित विज्ञान की आत्मा है।

गणित के महत्व को ध्यान मे रखकर गणित शिक्षण के उद्देश्य निर्धारित किये गये है जो मुख्यतः तीन है–

1. व्यवहारिक उपयोगिता का उद्देश्य।
2. सांस्कृतिक उद्देश्य।
3. अनुशासात्मक उद्देश्य।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में गणित शिक्षण के उद्देश्य निर्धारित किये गये है–

गणित को एक ऐसा साधन माना जाना चाहिए जो सोचने तर्क संगत ढंग से विचारों को प्रकट करने में सक्षम बना सकते हैं। एक विशिष्ट विषय होने के अतिरिक्त गणित को

वाली बाधाएँ दूर हो जावेगी।

4. उच्च शिक्षा के लिए दी जाने वाली छात्रवृत्ति तकनीकी तथा व्यवसायिक पढ़ाई को अधिक महत्व दिया जावे।

5. आंगनबाड़ी औपचारिक शिक्षा/ औपचारिकेत्तर शिक्षा केन्द्र तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र आदिवासी बहुल इलाको में प्राथमिकता के आधार पर खोले जावें।

6. आदिवासियों की समृद्ध सांस्कृतिक अस्मिता और शील सृजनात्मक प्रतिभा के बारे में चेतना सभी स्तरों के पाठ्यक्रमों का आवश्यक अंग होगा।

अध्ययन की आवश्यकता–

छ.ग. प्रदेश विभिन्न जनजातियों का प्रदेश है। उनकी अपनी बोली, भाषा, खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार एवं संस्कृति है।

वे आज भी अपनी संस्कृति के अनुसार ही जीवन–यापन करते है। उनके अपने व्यक्तिगत स्तर पर सीखने पढ़ने के अपने तौर तरीके हैं। यह मान्यता है कि गणित कठिन एवं नीरस विषय है। लेकिन वास्तविक में ऐसा नही है। गणित न एक कठिन विषय है और न ही नीरस है। कोई भी विषय न तो सरल है और न ही कठिन होता है, सीखने के तरीके हैं। नये सरल और रूचिकर तरीके से गतिविधियाँ आधारित शिक्षण होनी चाहिए।

बिलासपुर जिले की विभिन्न जनजातियां जैसे कि–बैगा, गोंड़, कंवर, महार, कोल, ऐसी ही जिन्होने गणित की कोई भी शिक्षा प्राप्त नही की फिर भी गणित का हिसाब अपने दैनिक जीवन में अपने ही तौर तरीके से हल कर लेते हैं। हम कह सकते हैं कि इनके अपने तरीके से गणित सीखने के तरीके है।

यह तरीके आज प्रचलित नही है अतः इन तरीको को जानने की जिज्ञासा ही शोध की पुष्टि होती है।

शिक्षा एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। छात्रों को आदर्श नागरिक बनाना उनकी अंतर्निहित शक्तियों को जागृत करता है। उन्हें समाज में उपयोगी जीवन जीने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना चाहिए। शिक्षा का प्रचार–प्रसार हेतु शासन द्वारा संचालित योजनाओं के अध्ययन से स्पष्ट निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। इसके लिए प्रतिवर्ष गांव–गांव मे नई पाठ शालाएं खोली जा रही है। हमारे देश गांवों की प्रगति ही देश की प्रगति है। अतः गांव के छात्र–छात्राओं का परिवेश किन सुविधाओं के साथ अपने विषय के प्राप्ति शैक्षिक उपलब्धि किस सीमा तक बढ़ जाती है। इसका अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

ग्रामीण विद्यालयों के अपेक्षा शहरी विद्यालयों के छात्रों का परीक्षाफल उत्तम होता है। गणित विषय में तो शहरी विद्यालयों के छात्र–छात्राएं बाजी मार जाते हैं। अतः उपरोक्त विसंगतियों के कारण शोधकर्ता के मानस पटल पर अनेक प्रश्न उठते हैं।

क्या वर्तमान में समाज तथा शिक्षण संस्थानों का परिवेश शिक्षा की ओर प्रेरित किये जाने के अनुकूल है।

क्या गणित की शिक्षा का वर्तमान संरचनात्मक ढांचा निर्धारित पाठ्यक्रम अध्ययन प्रणाली छात्र–छात्राओं की समझ तथा उनकी अभिरूचि के अनुरूप है।

ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में शिक्षा के प्रति एक ही वातावरण निर्मित होने के बावजूद परिणामों की भिन्नता का क्या कारण हो सकता है। इन्ही ज्वलंत प्रश्नों के समाधान साथ ही व्यवहारिक परिस्थितियों से आज निदान ढूंढे जाने हेतु शोध आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. विभिन्न जनजातियों के विद्यार्थियों के उनके अपने गणितीय संदर्भ के ज्ञान का अध्ययन करना।

2. विभिन्न जनजातियों के विद्यार्थियों के गणितीय उपलब्धि का अध्ययन।

3. विभिन्न जनजातियों के अभिभावकों के सामाजिक, आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों की गणितीय उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. विभिन्न जनजातियों के उनके अपने

1. संख्या
2. जोड़ की संक्रिया
3. घटाव की संक्रिया
4. समय की माप
5. क्षेत्रफल की माप
6. मापन

इसमें सरलता की दृष्टि से वस्तुनिष्ठ प्रकार के बहुविकल्पीय प्रश्नों को शामिल किया गया है।

तालिका–

उपलब्धि परीक्षण की संख्या एवं प्रमाणीकरण की स्थिति उपलब्धि परीक्षण के लगभग 15 प्रश्न चुने गए है। प्रश्न कक्षा 4थी के गणित की पाठ्य पुस्तक से चयनित किये गए है जिसके प्रश्नों के छ.ग. पाठ्यक्रम निगम के पाठ्यक्रम के अनुरूप विभिन्न जनजातियों के उनके अपने गणितीय ज्ञान के संदर्भ में तीन प्रकार के प्रश्नों को शामिल किया गया है।

क्र	प्रतिशत	आइटमों की संख्या
1. ज्ञानात्मक	20	03
2. अवबोधात्मक	33	05
3. अनुप्रयोगात्मक	27	04
4. कौशल	20	03
योग	100	15

शोध निधि– प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग दिया गया।

शोध अध्ययन का शैक्षिक महत्व–

बिलासपुर जिले के गौरेला, पेण्ड्रा, मरवाही विकासखण्ड के विभिन्न अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थी उनके गणितीय ज्ञान के संदर्भ में उनकी शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन इसका मुख्य उद्देश्य था। शासन द्वारा निर्धारित लक्ष्यो को पूर्ण करना एवं विकास के मुख्य धारा से जोड़ना मुख्य लक्ष्य है, अनुसूचित जनजाति के छात्र छात्राओ हेतु शासन द्वारा अनेक योजनाएँ संचालित है, जैसे– सरस्वती सायकल योजना, निशुल्क पाठ्य पुस्तक, मध्यान्ह भोजन, छात्रावास की सुविधा, राज्य छात्रवृत्ति आदि।

इसके अतिरिक्त शिक्षकों का सहयोग शाला प्रबंधन समिति स्थानीय समुदाय का सहयोग प्राप्त होता है अतः उनकी भूमिकाओं के अनुसार उन्हें शिक्षा प्रदान की जाती है, इन्ही आधार पर जानने का प्रयास किया गया है कि उपलिब्ध सार्थक रूप से अधिक है या नही प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष यह बात सामने आयी है कि विभिन्न अनुसूचित जनजातियों में उनके शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अंतर नही है, जबकि शैक्षिक उपलब्धि में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में अधिक है। जबकि विभिन्न अनुसूचित जनजातियों के शासन का एक बड़ा तंत्र लगा हुआ है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

पूर्व प्रदत्तों के विश्लेषण सांख्यिकी विवेचना एवं परिकल्पानाओं से प्राप्त परीक्षण एवं परिणामो की ब्याख्या निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि विभिन्न अनुसूचित जनजातियों के उनके गणितीय ज्ञान के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. विभिन्न अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सार्थक अंतर नहीं है। शहरी अनुसूचित जनजाति की अपेक्षा ग्रामीण अनुसूचित जनजाति छात्रों की उपलब्धि स्तर उच्च पाया गया।
3. विभिन्न जनजातियों के गणितीय ज्ञान के संदर्भ में लिंग के प्रभाव की दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. अभिभावकों के सामाजिक, आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
5. शहरी अनुसूचित जनजाति की अपेक्षा ग्रामीण अनुसूचित जनजाति छात्रों की उपलब्धि अधिक पायी गयी।

भावी शोध हेतु सुझाव–

1. ग्रामीण एवं शहरी अनुसूचित जनजाति छात्रों के पारिवारिक समस्या का अध्ययन।
3. विभिन्न अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों में तकनीकी शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
4. विभिन्न अनुसूचित क्षेत्र के छात्रों के बदले परिवेश एवं स्वच्छता का अध्ययन।

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

श्रीमती रीमा शर्मा
सहायक प्राध्यापक
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ.ग.)

कमल यादव
एम.एड. प्रशिक्षार्थी
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षा निरंतर चलने वाली विकासशील प्रक्रिया है जो निरंतर विकासशील है पिछले कुछ दशकों से शिक्षा के घटकों में कुछ नये पहलुओं पर ध्यान दिया जा रहा है जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि श्रेष्ठतम हो सके उनमें से एक है– उपलब्धि प्रेरणा। किसी भी प्रतिस्पर्धा में बेहतर प्रदर्शन एवं लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा का होना आवश्यक है। किसी उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए तीव्र उत्कण्ठा का होना उस उपलब्धि के प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है।

प्रस्तुत लघु शोध माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में उपलब्धि प्रेरणा एवं अध्ययन आदतों की जानकारी प्राप्त करना तथा उनके विकास के लिए उन्हें प्रेरित करना है ताकि उनके शैक्षिक उपलब्धि में वांछित स्तर की प्राप्ति हो सके। अपने रूचि के अनुकूल विषय का चयन उपलब्धि प्रेरणा के आधार पर करके अपने श्रेष्ठ अध्ययन आदतो के परिणामस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सफलता प्राप्त कर सके।

प्रस्तावना –

शिक्षा में गुणवत्ता की बढ़ती हुई मांग एवं विश्व मानक के अनुरुप शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता ने शिक्षा जगत् में प्रतिस्पर्धा को तीव्र कर दिया है, पिछले एक दशक से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रयास जो विद्यालय को और अधिक जवाबदेह बनाने के लिए किया जा रहा है। इसी क्रम में छात्रों के अध्ययन आदत, उपलब्धि प्रेरणा को बढ़ाना जिससे छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति को बेहतर बनाया जा सके, जिसके लिए हर स्तर पर प्रयास शैक्षणिक संस्थानों द्वारा किया जा रहा है।

आधुनिक भारतीय समाज विकासशील एवं उभरता हुआ भारतीय समाज माना गया है। इसलिए शिक्षा के आधुनिक उददेश्य की पूर्ति एक उपयुक्त विद्यालय ही कर सकता है। शिक्षा के लिए शिक्षाविद फ्रेडसन ने कहा है– ''आधुनिक शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति और समाज दोनों के कल्याण से है''

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपयुक्त विद्यालय के साथ–साथ प्रशिक्षित एवं कुशल शिक्षक जो विषय को बेहतर ढ़ंग से छात्रों तक संप्रेषित कर पाए। साथ ही उन्हे प्रेरित कर उचित निर्देशन के द्वारा उनके शैक्षिक उपलब्धि को बेहतर कर सके एवं उनमें अध्ययन आदत का विकास तथा उपलब्धि प्रेरणा को सक्रिय कर पाए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है।

अध्ययन आदतें –

शिक्षा का उद्देश्य अच्छी आदतों से युक्त चरित्रवान व्यक्तियों का निर्माण करना हैं। यदि मानव क्रियाओं का अध्ययन किया जाये तो हमें ज्ञात होगा कि मानव में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं–जन्मजात एवं अर्जित। आदत को अर्जित किया जाता है, जो वातावरण मे विकसित होती हैं। जिस कार्य को हम बार–बार करते हैं, वह हमारी आदत बन जाती है।

शर्मा एवं नंदा के अनुसार–

"To be a good students it is necessary to have good study Habits."

लिखने की आदत का विकास करना।
0 पाठ्य विषय पर संक्षिप्त टिप्पणियॉ लिखना।
0 शीघ्रता और सावधानी से पढ़ना।
0 एक विषय पर विभिन्न लेखकों के विचारों की खोज करना।
0 अध्ययन से संबंधित दत्त कार्य को पूर्ण करना।

उपलब्धि अभिप्रेरणा –

एटकिन्सन तथा फेदर ने उपलब्धि अभिप्रेरणा को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''उपलब्धि अभिप्रेरक व्यक्ति की अपेक्षागत रूप से वह स्थायी वृत्ति हैं जो उपलब्धि या सफलता प्राप्ति के संबंध में होती है।'' उपलब्धि अभिप्रेरक की इस परिभाषा से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि जिस मनुष्य में यह प्रेरक होता है वह हमेशा ही ऐसे कार्य को करना पसन्द करता है जिनके करने से उन्हें समाज में गौरव एवं प्रतिष्ठा की उपलब्धि हो। अभिप्राय यह हैं कि लोग उसकी प्रशंसा करें तथा उसका मनोवैज्ञानिक अहम् सन्तुष्ट होता रहे। मैक्लीलैण्ड तथा एटकिन्सन ने उपलब्धि अभिप्रेरक पर सबसे अधिक अध्ययन किए तथा सबसे अधिक महत्व भी इन्ही दोनों मनोवैज्ञानिकों ने प्रदान किया।

यह अभिप्रेरक मनुष्य को निम्न कार्य करने हेतु अभिप्रेरित करता हैं–

0 किसी भी प्रतियोगिता मे उच्च स्थान पाने हेतु प्रयास करना।
0 अपने आप चुने गये क्षेत्रों मे सफल होने के लिए प्रयास करना।
0 व्यवहार के किसी भी क्षेत्र मे उच्च स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करना।
0 व्यक्ति को अपने जीवन मे अधिक से अधिक उन्नति करने का प्रयत्न करना।
0 अपने कार्यो में सफल न होने पर उस विफलता का उत्तरदायी खुद को मानना।
0 किसी क्षेत्र या कार्य में सफल हो जाने पर अपनी सफलता पर प्रसन्न होना तथा गर्व करना।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व –

अभिप्रेरणा किसी भी कार्य को करने के लिए या लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक श्रेष्ठ साधन है। लक्ष्य प्राप्ति की तीव्रता का होना उसे पाने में सहायक सिद्ध होता है। उपलब्धि प्रेरणा विद्यार्थियों में एक नई एवं तीव्र उर्जा का संचार करता है जो उसे अध्ययन आदतो के विकास में मदद करता है एवं उसे भावी प्रतियोगिता के लिए तैयार कर उसे सफल बनाने में सहायक होता है।

वर्तमान समय जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा का है, इस समय में विद्यार्थियों में लक्ष्य प्राप्ति के लिए उत्तम अध्ययन आदत के साथ में उपलब्धि प्रेरणा का होना आवश्यक है ताकि वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्ति कर सके। आज प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का प्रदर्शन लक्ष्य के करना होगा तभी वह जीवन में वांछित सफलता प्राप्त कर पायेगा।

इन स्थितियों में विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है कि विद्यालय ऐसे रूचिकर एवं सकारात्मक वातावरण का निर्माण करे ताकि छात्रों में उत्तम आदतों एवं उपलब्धि प्रेरणा का विकास हो सके, शिक्षक का कार्य है कि वह छात्रों को अच्छी अध्ययन आदतों एवं उपलब्धि प्रेरणा के विकास के लिए प्रेरित करें।

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों एवं उपलब्धि प्रेरणा का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर देखने से आशय है कि उनकी अध्ययन आदतों तथा उपलब्धि प्रेरणा को विकसित करने के लिए उन्हें अभिप्रेरित किया जा सके ताकि व प्रतिस्पर्धा में स्वयं को सफल बना सके।

समस्या कथन (Statement of the problem) –

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

"Influence of Study Habit and Achievement Motivation on the Academic Achievement of Students at High School level"

शोध के उद्देश्य –

0 कक्षा 10वीं के छात्रों के अध्ययन आदतों एवं उपलब्धि प्रेरणा के बीच संबंधों

भी अच्छी अध्ययन आदतों के कारण उच्च शैक्षिक उपलब्धि पाते हैं तो हम यह कह सकते हैं कि शैक्षिक उपलब्धि पूर्णतः अच्छे अध्ययन आदतों पर निर्भर करती हैं।

भाम्बरी निशी, तिवारी प्रीति (2005)–''सी. बी.एस.ई. एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित उ.मा.वि. में अध्ययनरत छात्रों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''

निष्कर्ष–

सी.बी.एस.ई. एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा संचालित उ.मा.वि. में अध्ययनरत छात्रों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर पाया गया।

छात्राओं की अध्ययन आदतें, छात्रों की अपेक्षा उत्तम पाई गई।

बंजारे, कमल कपूर (2011)–''भाषायी दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि ा पर प्रभाव का अध्ययन।''

निष्कर्ष–

विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया हैं।

शोध विधि –

यह शोध विधि प्रयत्नों से संबंधित हैं अनुसंधान के अंतर्गत घटना एवं तथ्यों की स्थिति को निर्धारित करते हैं। अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि सामाजिक, वैज्ञानिकी अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अंतर्गत व्यापक तथा कम जनसंख्या का अध्ययन चयन किये गये प्रतिदर्शों के आधार पर उस आशय से किया जाता हैं कि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों विवरणों तथा पारस्परिक अंतर्संबंध का ज्ञान उपलब्ध हो सके।

सर्वेक्षण विधि एक वैज्ञानिक विधि हैं इसके अंतर्गत अध्ययनकर्ता घटना स्थल पर उत्तरदाता के संपर्क में आकर शोध से संबंधित तथ्यों की जानकारी प्रत्यक्ष प्राप्त कर सकता हैं। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा शोध हेतु आवश्यक प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

जनसंख्या –

जनसंख्या का तात्पर्य संपूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता हैं। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता हैं। शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों की सम्मिलित किया जाता हैं। वह सजातीय होते हैं एक विशिष्ट समूह की समस्त इकाईयों को मिलकर जनसंख्या कहते हैं।

प्रस्तुत लधु शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या बिलासपुर जिले के बिल्हा विकास खण्ड में संचालित शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राएँ हैं।

न्यादर्श –

''प्रत्येक विज्ञान की शाखा में हमारे साधन सीमित हैं, इसलिए संपूर्ण तथ्य के एक अंश से अधिक का अध्ययन नहीं कर पाते तथा उसके बारे में ज्ञान प्रस्तुत किया जाता हैं।''

– डब्ल्यू. जी. कोकरन

इस परिभाषा में अंश को न्यादर्श माना हैं, संपूर्ण तथ्य को जनसंख्या की संज्ञा दी गई हैं। एक अंश के आधार पर संपूर्ण तथ्य के बारे में ज्ञान दिया जाता हैं जिसे न्यादर्श प्रक्रिया कहते हैं।

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन बिल्हा विकास खण्ड के 06 ग्रामीण एवं 06 शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन ''यादृच्छिक विधि'' से किया गया।

परीक्षण किया गया।

परिकल्पना क्रमांक–01

H_{-01} छात्रों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

छात्रों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा के मध्य सार्थकता का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	अध्ययन क्षेत्र	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणिक	विचलन	Df	t सार्थकता
1	अध्ययन आदत	120	174.58	20.07	238	9.56	P > 0.01
2	उपलब्धि प्रेरणा	120	91.78			13.04	

उक्त परिकल्पना हेतु मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर अंतर की सार्थकता जांच हेतु टी परीक्षण का प्रयोग किया गया ।

व्याख्या–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों के अध्ययन आदत परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान 174.58 तथा प्रमाणिक विचलन 20.07 एवं छात्रों के उपलब्धि प्रेरणा के प्राप्तांकों का मध्यमान 91.78 तथा प्रमाणिक विचलन 13. 04 प्राप्त हुआ। छात्रों के अध्ययन आदत व उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमानों में अन्तर के सार्थकता की जाँच के लिए 'टी' परीक्षण किया गया, जिसका मान 9.56 प्राप्त हुआ। 238 स्वतंत्रता अंश पर 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीगत मान क्रमशः 2.35 और 1. 65 है। गणना से प्राप्त टी का मानतालिका मान से 0.01 व 0.05 पर अधिक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षः

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा के बीच सार्थक अंतर पाया गया है। अतः परिकल्पना क्रमांक H_{O1} अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–02

H02 छात्रों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का संयुक्त प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं होगा।

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा के संयुक्त प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण

चर	शैक्षिक उपलब्धि (x)	अध्ययन आदत (y)	उपलब्धि (z)
शै.उ.	1.0	0.48	0.39
अ.आ.	0.48	1.0	0.25
उ.प्रेरणा	0.39	0.25	1.0

R=c/?ab

R=0.55

व्याख्या –

उपरोक्त गणना में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन आदत तथा उपलब्धि प्रेरणा के साथ सहसंबंध गुणांक क्रमशः 0.48 तथा 0.39 था, अब बहुचरीय सहसंबंध में अथवा अध्ययन आदत तथा उपलब्धि प्रेरणा के संयोजित हो जाने से शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबंध गुणांक 0.55 हो गया है। अतः शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदत तथा उपलब्धि प्रेरणा का संयुक्त प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष –

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का संयुक्त प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना क्रमांक 02 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक–03

H03 बालक एवं बालिकाओं की अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन आदत में बालक एवं बालिकाओं के मध्य सार्थकता का सांख्यिकीय विश्लेषण

स. क्र	अध्ययन आदत	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	Df	t	सार्थकता
1	बालक	60	181.57	24.74	118	2.25	P < 0.01
2	बालिका	60	173	16.12			

व्याख्या –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बालक के अध्ययन आदत परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान 181.57 तथा प्रमाणिक विचलन 24.74 एवं बालिका के अध्ययन आदत के प्राप्तांकों का मध्यमान 173 तथा प्रमाणिक विचलन 16.12 प्राप्त हुआ। बालक एवं बालिका के उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमानों में अन्तर के सार्थकता की

स. क्र.	अध्ययन आदत	न्यादर्ष	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	Df	t	सार्थकता
1	ग्रामीण	60	88.55	512.50	118	2.79	P > 0.01
2	षहरी	60	95.02	12-86			

व्याख्या –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्रों के उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान 88.55 तथा प्रमाणिक विचलन 12. 50 एवं शहरी छात्राओं के अध्ययन आदत के प्राप्तांकों का मध्यमान 95.02 तथा प्रमाणिक विचलन 12.86 प्राप्त हुआ। ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के अध्ययन आदत के मध्यमानों में अन्तर के सार्थकता की जाँच के लिए 'टी' परीक्षण किया गया, जिसका मान 2.79 प्राप्त हुआ। 118 स्वतंत्रता अंश पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीगत मान 2.62 है। गणना से प्राप्त टी मान, तालिका मान से अधिक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षः

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के उपलब्धि प्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक H_{O6} अस्वीकृत की जाती है।

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक स्थिति एवं अध्ययन आदतों का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. अनुसूचित जाति तथा जनजाति बालक–बालिकाओं के अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. सी.बी.एस.ई. एवं सी.जी. स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
4. शासकीय एवं अशासकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं में अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।
6. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावकों के अभिप्रेरणा का विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन।
7. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में अध्ययन आदतों एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके व्यक्तित्व में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
8. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में अध्ययन आदतों एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके व्यवसायिक अभिरूचि में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
9. छात्रों में अध्ययन आदतों एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके समायोजन क्षमता में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
10. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनके व्यवसाय चयन में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
11. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों में अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा के उनके तार्किक क्षमता में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
12. उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनके चिन्तन क्षमता में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
13. उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनके वैज्ञानिक अभिवृत्ति में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
14. उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनके अभिव्यक्ति कौशल में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
15. उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनके गणितीय दक्षता में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

13. वर्मा एस. एवं कुमार, आर. में अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि का सह–संबंधात्मक अध्ययन'' जनरल ऑफ साइकोमिट्रीक एवं एजुकेशन सर्वे ऑफ एजुकेशन रिसर्च वाल्यूम एन.सी.ई.आर.टी पृ. क्र.228 – ''किशोर बच्चों के शैक्षिक अभिप्रेरणा के संदर्भ

14. वर्मा बी.पी., शेख सी. एवं संगीता संदर्भ में अध्ययन आदत का अध्ययन'' साइकोलिग्गुआ, सर्वे ऑफ एजुकेशन रिसर्च वाल्युम एन.सी.ई.आर.टी. पृ.क्र. 337 – ''किशोर बच्चों के शैक्षिक अभिप्ररेणा के संदर्भ

15. विफोक, आर.एल. एवं कफका,जी.एफ. आदतों एवं अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन'' सर्वे आफॅ एजुकेशन रिसर्च वाल्युम – ''शैक्षिक उपलब्धि को सुधारने में अध्ययन

शाब्दिक तर्कः– शाब्दिक तर्क का अर्थ शब्दों में तैयार अवधारणाओं का उपयोग करके समझते हुए तर्क करना है। इसके अंतर्गत सरल– प्रवाह या शब्दावली मान्यता के स्थान पर रचनात्मक रूप से सोचने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

अशाब्दिक तर्क :– आरेखों का उपयोग विचारों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। अशाब्दिक तर्क (अभाषिक तर्क) अनुक्रम में व्यवस्थित आकड़ों की एक श्रृंखला दिखाती है।

पैटर्न और रिक्त ऑकड़ों की पहचान कर रिक्त स्थान की पूर्ति की जाती है। अशाब्दिक तर्क के प्रश्न सामान्य बुद्धि के सबसे अच्छे संकेत होते हैं।

गणितीय उपलब्धि :–

उपलब्धि व्यक्ति की उस क्षमता को दर्शाता है जो पूरा प्रयत्न करने के लिए और प्रदर्शन में अन्य सीमा समाप्त करने के लिए व्यक्ति को सक्षम बनाता है। शैक्षणिक रूप से उपलब्धि शब्द का अर्थ यह है कि व्यक्ति द्वारा किसी विशेष क्षेत्र में वांछित स्तर तक प्रदर्शन करना।

शब्द 'उपलब्धि' साधारण तौर पर विभिन्न विषयों में छात्र की अकादमिक स्थिति या अकादमिक उपलब्धि की अवधि में लागू होती है। अकादमिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान है जो समझने या कौशल निर्देशों और प्रशिक्षण के उपरांत प्राप्त किया जाता है। वर्तमान समय में समाज में उपलब्धि को विशेष महत्व प्राप्त है। जिन छात्रों की अकादमिक उपलब्धि अच्छी होती है उनका चुनाव उच्च अध्ययन हेतु किया जाता है। गणितीय उपलब्धि का स्थान उपलब्धि के क्षेत्र में अतुलनीय है शैक्षणिक विकास के लिए गणितीय उपलब्धि का बहुत अधिक महत्व है। यह गणितीय ज्ञान का ही परिणाम है जिसके माध्यम से मनुष्य बाहरी अंतरिक्ष का पता लगाने में सक्षम रहा है और आज वह चंद्रमा पर आवासीय कालोनियों को विकसित करने के बारे में सोच रहा है। गणित विषय के अध्ययन के परिणाम स्वरूप जो अंक या ग्रेड प्राप्त होते हैं उससे छात्रों की सफलता का आकलन करना ही गणितीय उपलब्धि कहलाता है।

अध्ययन के उद्देश्य **(Objective of Study)** :–

- माध्यमिक स्तर पर विद्याथियों के लिंग के आधार पर तार्किक क्षमता का अध ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर गणितीय उपलब्धि का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर विद्याथियों के क्षेत्र के आधार पर तार्किक क्षमता का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के क्षेत्र के आधार पर गणितीय उपलब्धि का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के तार्किक क्षमता का उनकी गणितीय उपलब्धि में सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

अध्ययन की परिकल्पना **(Hypothesis of Study)**:–

- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर तार्किक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर गणितीय उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के क्षेत्र के आधार पर तार्किक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के क्षेत्र के आध ाार पर गणितीय उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

- विद्यार्थियों के तार्किक क्षमता का उनकी गणितीय उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

प्रस्तुत पदों की परिभाषाः–

माध्यमिक स्तर के कार्यात्मक विद्यार्थीः–

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर का तात्पर्य माध्यमिक शिक्षा मंडल (रायपुर) द्वारा मान्यता प्राप्त शासकीय विद्यालय में सत्र 2017–18 में कक्षा 9 वीं एवं 10 वीं अध्ययन–रत विद्यार्थियों से है।

प्रश्नावली निर्माण की योजना समस्या से संबंधित पूर्व शोध एवं संबंधित विषय सामग्री के अध्ययन के आधार पर तैयार की गई।

मूल्यांकन :–

शोधकर्ता। द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली के प्रश्नों को विषय विशेषताओं विद्वानों श्री रमेश राजपूत व्या. (पं.) शा.उ.मा.वि. पडियाइन विकासखण्ड – पथरिया जिला – मुंगेली, श्री जागेश्वर देवांगन शि. (पं.) शा.उ.मा.वि. चिंगराजपारा। वि.ख.–बिल्हा जिला बिलासपुर श्रीमती रेखा दुबे व्या.(पं.) गणित शा.उ.मा.वि. मंजूरपहरी वि.खं. बिल्हा जिला – बिलासपुर श्री सी.बी. सिंह शि.(पं.) मीडिल स्कूल कांसाबेल जिला जशपुर से प्रश्नों की उपयुक्तता, कठिनाई स्तर पर संरचना भाषाशैली एवं दोष संबंधी मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गयी तथा प्राप्त सुझावों के आधार पर प्रश्नावली में आवश्यक संशोधन किया गया। प्रश्न की व्यापकता, वैधता आदि को ध्यान में रखते हुए अंतिम रूप से 30–30 पदों की प्रश्नावली तैयार की गई।

फलांकनः–

प्रश्नों के सही उत्तर में 2 अंक तथा गलत उत्तर में 0 अंक निर्धारित किए गए हैं।

तथ्यों का विश्लेषण व्याख्या एवं परिणामः–

परिकल्पना क्रमांक **H01**:–

'' माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर तार्किक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की तार्किक क्षमता के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना करने हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित तार्किक क्षमता परीक्षण का प्रशासन किया गया एवं प्राप्त आकड़ों सारणीकृत किया गया।

तालिका क्रमांक – 1

विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर तार्किक क्षमता परीक्षण के प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

विकल्प प्रयोज्य 50	a 5वर्ष 46	b 7वर्ष –	c 9वर्ष –	d 11वर्ष –	अभिमत अप्राप्त 04	प्राप्त सही अभिमत का प्रतिशत
प्राप्त अभिमत का प्रतिशत	92	.	.	.	8	100

स्वतंत्रता की कोटि 198 df पर 0.05 विश्वास स्तर पर सारणीमान = 1.97

व्याख्या :– तालिका क्रमांक 4.1 में माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के तार्किक क्षमता का मध्यमान क्रमशः M_1=32.5 तथा M_2=32.53 है तथा बालक बालिकाओं के प्रमाणिक विचलन का मान SD_1=10.07 तथा SD_2=9.71 है। तार्किक क्षमता के मध्यमानो में अंतर की सार्थकता की जांच की जांच हेतु t परीक्षण किया गया, जिसका मान t =0.021 प्राप्त हुआ। जो कि 198 की स्वतंत्रता अंश पर 0.05 विश्वास स्तर पर सारणीकृत मान 1.97 से कम है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है

यह मूल्य 198 **df** स्वतंत्रता अंश पर 0. 05 विश्वास स्तर पर 1.97 (सारणीमान) से कम है अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिणाम':– 0.05 सार्थकता स्तर पर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के तार्किक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना Ho1 स्वीकृत होती है।

निष्कर्षः– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर तार्किक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक **$H0_2$**:–

'' माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिंग के आधार गणितीय उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।'' माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की गणितीय उपलब्धि के प्राप्तांक के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणाना करने हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित गणितीय उपलब्धि परीक्षण का प्रशासन किया गया एवं प्राप्त आकड़ों को सारणीकृत किया गया।

तालिका क्रमांक –2

विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर गणितीय उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों

परिकल्पना क्रमांक **H04** :–

'' माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के क्षेत्र के आधार पर गणितीय उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के गणितीय उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना करने हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित गणितीय उपलब्धि परीक्षण का प्रशासन किया गया एवं प्राप्त आकड़ों को सारणीकृत किया गया।

तालिका क्रमांक–4

विद्यार्थियों के क्षेत्र के आधार पर गणितीय उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	प्रयोज्य	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	df	t मान	सार्थकता अंतर
1	ग्रामीण	100	22.24	8.87			
2	शहरी	100	17.56	8.29	198	3.87	सार्थक अंतर है

स्वतंत्रता की कोटि 198 df पर 0.01 विश्वास स्तर पर सारणीमान = 2.60

व्याख्याः– तालिका क्रमांक 4 में माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के गणितीय उपलब्धि के मध्यमान M_1=22.24 तथा M_2=17.56 एंव मानक विचलन का मान SD_1= 8-87 तथा SD_1= 8-29। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के गणितीय उपलब्धि के मध यमानों में अंतर की सार्थकता की जांच करने हेतु t परीक्षण किया गया। जिसका मान जत्र 3.87 प्राप्त हुआ। जो कि 198 df स्वतंत्र अंश 0.01 विश्वास स्तर पर सारणीकृत मान 2.60 से अधिक है, शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

यह मूल्य 198 df स्वतंत्रता अंश पर 0. 01 विश्वास स्तर पर 2.60 (सारणीमान) से अधि ाक है तथा परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिणामः–

0.01 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों पर गणितीय उपलब्धि ा में सार्थक अंतर है अतः उपलब्धि परिकल्पना H04 अस्वीकृत (निरस्त) होती है।

निष्कर्षः–

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के क्षेत्र के आधार पर गणितीय उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

परिकल्पना **$H0_5$** :–

''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के तार्किक क्षमता का उनकी गणितीय उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

उक्त परिकल्पना की गणना हेतु विद्यार्थियों के उच्च व निम्न तार्किक क्षमता के आकड़ों को घटते क्रम में व्यवस्थित कर तदानुरूप उनके उच्च व निम्न गणितीय उपलब्धि ा के आकड़ो को घटते क्रम में व्यवस्थित किया गया, तत्पश्चात् उच्च व निम्न गणितीय उपलब्धि के आकड़ो के मध्यमान एवं मानक विचलन को सारणीकृत किया गया।

तालिका क्रमांक – 5

उच्च व निम्न तार्किक क्षमता वाले विद्यार्थियों के गणितीय उपलब्धि में अंतर की सार्थकता की जांच का सांख्यिकी विश्लेषण :–

क्र.	प्रयोज्य	न्यादर्श	गणितीय उपलब्धि Mean	SD	df	t मान	सार्थकता
1	उच्च तार्किक क्षमता	54	26.43	8.88			
2	निम्न तार्किक क्षमता	54	16.11	6.87	198	9. 91	सार्थक अंतर है

स्वतंत्रता की कोटि 198 df पर 0. 01 विश्वास स्तर पर सारणीमान = 2.60

व्याख्याः–

तालिका क्रमांक 5 में उच्च एवं निम्न तार्किक क्षमता वाले विद्यार्थियों के समूह के पहचान हेतु उच्च समूह (सं. क्र. 1 से 54 तक) 27ः अर्थात 54 विद्यार्थियों इसी प्रकार निम्न समूह (स.क्र. 146 से 200 तक) 27ः अर्थात 54 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।

उच्च एवं निम्न तार्किक क्षमता वाले विद्यार्थियों के समूहों के गणितीय उपलब्धि के मध्यमान एवं मानक विचलन के मानों की गणना की जिसका विवरण तालिका क्र. 4.5 में प्रस्तुत है। जिसके अनुसार उच्च व निम्न गणितीय

"कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय और सामान्य विद्यालय के बालिकाओं में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध निर्देशक
श्री डी.के.जैन
व्याख्याता
उ.शि.अ.सं. बिलासपुर

एम.एड. प्रशिक्षार्थी
रीता गिरी
उ.शि.अ.सं. बिलासपुर

सारांश

बच्चे किसी भी राष्ट्र की अमूल्य निधि माने जाते है। यही बच्चे देश का भविष्य भी होते है। लेकिन देश के भविष्य को गढ़ने वाले बच्चे कहीं कुपोषण का शिकार हो रहे हैं, तो कहीं फूलों के समान कोमल शरीर को घरों और विद्यालयों के अस्वच्छ वातावरण में रहना पड़ता है। फलस्वरूप खेलने–कूदने और पढ़ने की उम्र में उन्हें रोगों से जूझना पड़ता है, जो कि बाल मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। स्वच्छता का स्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है आरोग्य को नष्ट करने में जितने भी कारण है, उनमें गंदगी प्रमुख है; बीमारियां गंदगी में ही पलती है। निवास स्थान तथा उसके आस–पास गंदगी का रहना स्वास्थ्य के लिए स्पष्ट खतरा है। गंदगी जितनी निकट आती जाती है, उतनी ही उसकी भयंकरता बढ़ती जाती है। मनुष्यता का प्रथम चिन्ह स्वच्छता की ओर हमें अधिक तत्परता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। इस दिशा में जितनी प्रगति हो सकेगी उतना ही यह समझा जायेगा कि पशुता को छोड़ा जा रहा है। स्वच्छता में मानवता का सम्मान है।

प्रस्तावना :–

जिस प्रकार किसी भवन के निर्माण में सुदश्ढ़ नींव का महत्व होता है। उसी प्रकार बालक के शिक्षित बनने तथा व्यक्ति के क्रमिक गठन में प्राथमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस आयु स्तर पर बालक अत्यंत जिज्ञासु होता है। बड़े–बड़े चारित्रिक गुण उत्तम स्वभावों के रूप में इसी समय निर्मित होते है। उनमें अनुशासन, परिश्रम, स्वावलंबन, सामूहिक भावना का विकास तथा सहकारिता का अभ्यास इसी आयु में उत्पन्न किया जा सकता है।

मानव की उत्पत्ति और उसके विकास का प्राथमिक आधार स्वास्थ्य है, स्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। बालिकाओं को शिक्षित, स्वावलम्बी, सम्मानित और सामर्थ्यवान बनाये बिना, समाज और राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती इसलिए बालिकाओं को स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में शिक्षित करना आवश्यक है क्योंकि घर में यदि नारी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के महत्व को समझती है और जागरूक है तो वह पूरे परिवार को जागरूक कर सकती है। स्वच्छता और स्वास्थ्य दोनो का आपस में घनिष्ठ सम्बंध है। यह सर्वविदित है कि साफ–सफाई मानव स्वास्थ्य पर सीधा असर डालती है इतना ही नहीं शरीर के स्वस्थ रहने के लिए हर स्तर पर स्वच्छता आवश्यक हैं।

के मध्यमानों में सार्थक अंतर नही होता है।

H_{03}. ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय और सामान्य विद्यालय की बालिकाओं में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नही होता है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता ने शोध की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

जनसंख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या अर्थात् सूरजपुर जिले के 6 विकासखण्डों जिनमें शहरी एवं ग्रामीण कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय के कक्षा 8 वीं की बालिकाओं को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

शोध न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से सूरजपूर जिले के विकासखण्ड सूरजपूर, प्रतापपुर, भैयाथान और ओड़गी में संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं चार गैर आवासीय विद्यालय (सामान्य विद्यालय) में अध्ययनरत् कक्षा 8वीं के बालिकाओं का चयन किया गया है। चयनित शालाओं का नाम, विकासखण्ड का नाम एवं बालिकाओं की संख्या निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

शोध चर (चरांक) :–

- स्वतंत्र चर – कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, सामान्य विद्यालय
- आश्रित चर – स्वच्छता एवं स्वास्थ्य
- सह चर – ग्रामीण छात्राएं एवं शहरी छात्राएं

प्रयुक्त उपकरण –

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता प्रश्नावली –

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली (मापनी) का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं विश्लेषण (Analysis and Testing of Hypothesè):–

परिकल्पना क्रमांक – Ho_1

तालिका

चयनित शालाओं एवं बालिकाओं की संख्या

क्र.	विकासखण्ड	कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय	बालिकाओं की संख्या	(गैर आवासीय विद्यालय) सामान्य विद्यालय	बालिकाओं की संख्या	योग
1	सूरजपूर	सूरजपूर (शहरी)	30	शा.क.उ.मा. वि. सूरजपूर	30	60
2	प्रतापपुर	प्रतापपुर (शहरी)	30	शा.क.पू.मा.वि. प्रतापपुर	30	60
3	भैयाथान	भैयाथान (ग्रामीण)	30	शा. क.पू.मा.वि. भैयाथान	30	60
4	ओड़गी	ओड़गी (ग्रामीण)	30	शा.क. पू.मा.वि. चन्द्रा	30	60
	कुल		120		120	240

व्याख्या :–

प्राप्तांकों की गणना द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर तालिका क्रमांक –3 में ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय के बालिकाओं की स्वच्छता एवं स्वस्थ्य संबंधी जागरूकता के प्राप्तांकों का मध्यमान 14.6 है तथा ग्रामीण सामान्य विद्यालय का मध्यमान 11.8 है, मध्यमान के स्तर पर दोनो में अंतर है। अतः दोनों विद्यालयों की जागरूकता के, मध्यमानों में सार्थक अंतर को जानने हेतु 't' के मान की गणना की गई। गणना द्वारा प्राप्त 't' का मान 3.27 है।

यह मान 118 df स्वतंत्रता अंश पर 0. 01 विश्वास स्तर पर तालिका मान 2.63 से अधिक हैं अतः सार्थक अन्तर पाया गया। इस स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष –

परिकल्पनाओं के परीक्षण पश्चात प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है –

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की बालिकाओं में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, सामान्य विद्यालय की बालिकाओं की तुलना में अधिक पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
2. शहरी क्षेत्र में स्थित सामान्य विद्यालय की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की बालिकाओं में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता अधिक पाया गया। अतः इस स्तर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
3. ग्रामीण क्षेत्र में स्थित सामान्य विद्यालय की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की बालिकाओं में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता अधिक पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विवेचना :–

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवसीय विद्यालय में बालिकाएँ एक साथ एक जैसे परिवेश में रहती है जहाँ उन्हे स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा दी जाती है

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में प्रतिदिन प्रातः योगा, पीटी, व स्वच्छता की कक्षाएं लगायी जाती है जिससे वे स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी आदतों में अधिक जागरूकता होते हैं।

जबकि सामान्य विद्यालय की बालिकाएँ अलग–अलग परिवेश से आती है जिससे उनके रहन–सहन, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी आदतों पर उनके घर–परिवार एवं परिवेश का प्रभाव रहता है।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन शैक्षिक महत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उपरोक्त तथ्यों का दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु इस समस्या का चयन किया गया। इसकी उपादेयता के बिन्दु इस प्रकार हैः–

1 बालिकाओं को आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बनाने में शिक्षा की उपयोगिता बताना तथा उन्हें शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना।

2 बालिका विद्यालयों में आकर्षक वातावरण का निर्माण कर व्यक्तित्व का विकास करना।

3 प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष में कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिका शिक्षा में महत्ता स्पष्ट रूप से पता चलता है अतः शासन कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय

"A Comparative Study of Government and Non-Government Primary School Teacher's Awareness towards Fundamental "Right to Education"

- Dr. Kshama Tripathi, Ku. Shakuntala Soni

Abstract

The RTE Act 2009 provides the right to free and compulsory Education. To every child in the age of 6-14 yr. in India. The act is the foundation for the development of a common public school system that can provide quality education to all the children thus preventing of exclusion socially & economically weaker sections of population. This research is directed to study of Govt. and Non. Govt. Primary School teacher's awareness towards Fundamental Right to Education. The study was conducted on 200 Primary level school teacher's. Selfmade tool "Awareness towards fundamental Right to Education" was used as a tool for collection of data.

Introduction:

Education has been considered as the major instrument to address inequalities in the Indian society by promoting equality social Justice and respect for the individual human being which are preconditions for ensuring rights. The 1986 education policy of India and its program of action suggests various measures to bring equality through the system of education. A whole chapter of the 1986 National Policy on Education (NPE) spell's our measure to promote equality of educational opportunity by attending to the specific needs of the deprived sections of society.

Particularly the primary school years are an important phase in child's education because it is the foundation for his learning. It is also the time when the children are more inquisitive. What do they ask and how their questions are answered will be crucial to his development later on in life. During these formative years the Education should build their confidence & desire in learn and expose them to different aspects of learning in academic & non academic areas so that the children will have a well rounded primary education. It is very essential that every section of the society is able to access the quality Education.

In addition to quality of education, equality of education is also essential. Equality of education mean equality in educational & related resources equality of respect and recognition, equality of power, equality of love, care and solidarity, equality of access, equality of opportunities and equality of outcomes. By combination of both i.e., quality education & equality of education school can transform in to truly equalitarian institution. So the universalisation of education is essential universalization of provision, universalization of enrolment, universalization of retention, universalization of participation and universalization of achievement.

It has also been stated in the National Policy on Education 1986 that strenuous efforts should be made for early fulfillment of directive principle under article 45 of constitution seeking to provide free and compulsory Education to all children upto 14 yrs of age. It was followed the reinforcement by plan of action 1992. In the direction of ensuring quality elementary education for all, the need for a regulation occurred to make it sure that elementary education should be provided to children as a right. As a result the concept of Right to Education came into existence. In India universalization of Elementary Education has been a national goal since Independence. After Independence Article 45 under the newly framed Indian Constitution stated that the state shall endeavour to provide with in a period of ten years from the commencement of this constitution for free and compulsory education for all children until they complete the age of fourteen. years. Free and Compulsary elementary education was made a fundamental right

Non Govt. Schools towards Right to Education .

o To study the awareness of rural/urban primary school teacher's towards Right to Education.

HYPOTHESIS OF STUDY

Ho1 There will be no significant difference between awareness towards Right to Education of male/female teacher's of Govt. Schools at Primary Level.

Ho2 There will be no significant difference between awareness towards Right to Education of male/female teacher's of Non Govt. Schools at Primary Level.

Ho3 There will be no significant difference between awareness towards Right to Education of teacher's of Govt./ Non Govt. Schools at Primary Level.

Ho4 There will be no significant difference between awareness towards Right to Education of teacher's of rural/urban Schools at Primary Level.

RESEARCH METHODOLOGY

In the present study the nature of the problem is descriptive. Therefore the survey method has been used in the study. The method of sampling in the present study has been used randomly selection from all the primary level of schools teacher's of Bilha Block of Bilaspur district. The study cover male/female teacher's of rural and urban areas of Bilha Block.

The tool used in the present study for the purpose of data collection is as. Awareness questionnaire towards fundamental Right to Education. The relevant data were collected on self made questionnaire and has been presented in the tabulation form for the analysis and interpretation. Statistical calculation were made for analyzing & interpretation.

The mean, S.D. and t-test were used to test the significant difference between means of two group.

POPULATION

In this study, all Primary school Teachers of Bilaspur District is population.

SAMPLE-

To study the large population directly is an endless process or almost impossible. Some of the population is so large that their characteristics could never be measured or studied completely. Therefore a sample group is selected which characterizes the whole population and is tested and its analysis gives the properties of the population.

Random Sampling Method is used by the researcher.

Table- 01

	Govt.		Non. Govt.		Total
	M	F	M	F	
Rural Teachers	25	25	25	25	100
Urban Teachers	25	25	25	25	100
Total	50	50	50	50	200

RESEARCH TOOLS

The researcher himself designed a tool for collecting the data for studying . "A Comparative Study of Government and Non-Government Primary School Teacher's Awareness towards Fundamental "Right to Education".

STATISTICS USED :

The present study has been analysed by descriptive & inferential statistics by which the hypothesis where tested and conclusion is inferred.

Descriptive Statistics includes Mean, S.D.

Inf Statistics includes 't' test is applied and two means are compared.

ANALYSIS AND INTERPRETATION OF DATA

Keeping the problem in view hypoth-

significant at 0.01 level indicates no significant difference between awareness towards Right to Education of male female teachers of Non-Govt. schools at Primary level.

So far as mean values concerned female teachers scored higher than male teacher's in questionnaire but to test whether the difference in mean values is only due to chance or a real significant difference exists the following null hypothesis is tested by using t-test so the null hypothesis is retained.

Ho3 : There will be no significant difference between awareness towards Right Right to Education of Teacher's of Govt./Non-Govt Schools at Primary level.

Table - 3

Mean and S.D. showing difference in RTE awareness among Male and Female Primary Teachers of Govt. and Non-Govt. School.

Group N	N	M	Sd	df	H	Significance
Govt. School Teachers	100	83.88	3.39	198	72	0.78
Non-Govt School Teachers	100	79.63	4.83		72	0.05

Graph - 4

Bar Graph presenting Mean and S.D. showing difference in RTE awareness among Male and Female Primary Teachers of Govt. and Non-Govt. School.

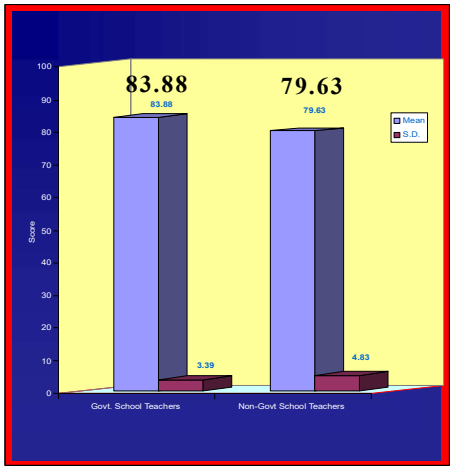

Table 3 shows that the mean value of Govt. School teacher's in relation to awareness on RTE act is higher than Non-Govt. School teacher's. The critical table value of 't' with 198 degree of freedom at 0.05 and 0.01 level of significance is 1.97 and 2.60. The computed value of 't' is 7.2 which is greater than the critical table value. Hence it is significant up to both 0.05 and 0.01 level of significance. Therefore the result depicts that there is significant difference between awareness towards Right to Education of teacher's of Govt. and Non-Govt. Schools at Primary level. So null hypothesis rejected.

Ho4 : There will be no significant difference between awareness towards Right to Education of Teacher's of Rural and Urban Schools at Primary level.

Table - 5

Mean and S.D ratio showing difference in RTE awareness among Male and Female Primary Teachers of Rural and Urban School.

Group N	N	M. SD	DF	t	Significance
Urban Teachers	100	82.4 4.38	198	0.44	Not Significant
Rural Teachers	100	82.13 4.38			

Graph - 5

Bar Graph presenting Mean and S.D ratio showing difference in RTE awareness among Male and Female Primary Teachers of Rural and Urban School.

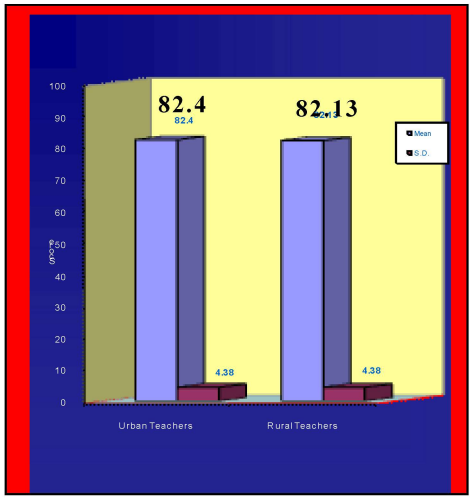

BIBLIOGRAPHY

o Education commission (1966) Education & National Development Report of the Education Commission 1964-66 Ministry of Education Govt. of India.

o Government of India (1986), National Policy on Education 1986 New Delhi, Ministry of Human Resource Development

o Govt. of India (1993), National Policy on Education 1986 (with modification undertaken in 1992) New Delhi, Ministry of Human Resource Development

o Ministry of Human Resource development (MHRD) 1990, Towards an enlightened and humane society NPE, A Review New Delhi MHRD.

o NCERT, (2005), National Curriculum, Framework, New Delhi

o The Right of children to free and compulsory education act 2009 Ministry of law and Justice Govt. of India.

o Kothari, C.R. 2004. Research Mehtodology : Methods and Techniques. New Delhi : Vishwa Prakashan 11 (12).

o Kothari. 1966. " Education and National Development : Report of the education commission, 1964-66." Ministry of education, India 267 (5).

o Garret, H.E. 2008. Statistics in Psychology and Education, Delhi : Surjeet Publications. (14)

Websites :

" RTE in India," RTE India, 2011, website, www.rteindia.com.

" India Right to Education, retrieved on 07.03.2010, http://righttoeducation.in/

Significance of the Study :

Different Styles of Leadership

Various authorson leadership have given different number of leadership styles. In its basic differentiation it can be divided into three leadership styles viz. autocratic, democratic and deligative.

(a) Authoritarian Leadership (Autocratic)

Authoritarian leaders, also known as autocratic leaders, provide clear expectations for what needs to be done, when it should be done, and how it should be done. There is also a clear division between the leader and the followers. Authoritarian leaders make decisions independently with little or no input from the rest of the group.

Researchers found that decision-making was less creative under authoritarian leadership. Lewin also found that it is more difficult to move from an authoritarian style to a democratic style than vice versa. Abuse of this style is usually viewed as controlling, bossy, and dictatorial.

Authoritarian leadership is best applied to situations where there is little time for group decision-making or where the leader is the most knowledgeable member of the group.

Characteristics of Autocratic Leadership

The major autocratic leadership style characteristics include:

1. The autocratic leader retains all power, authority, and control, and reserves the right to make all decisions.
2. Autocratic leaders distrust their subordinate's ability, and closely supervise and control people under them.
3. Autocratic leaders involve themselves in detailed day-to-day activities, and rarely delegate or empower subordinates.
4. The autocratic leader adopts one-way communication. They do not consult with subordinates or give them a chance to provide their opinions, no matter the potential benefit of such inputs.
5. Autocratic leadership assumes that employee motivation comes not through empowerment, but by creating a structured set of rewards and punishments.
6. Autocratic leadership is an extreme version of task-oriented or assertive leadership. A manager with this style typically relies on his authority, assertiveness, position and fear to motivate workers to complete tasks on time. While this approach can lead to efficiency benefits, it may also cause low employee morale and high turnover. Autocratic leaders normally share a few common traits.

(i) Domineering :

Autocratic leaders normally exhibit a high degree of dominance. This includes a captivating persona, aggressive demeanor and vocal assertiveness

(ii) Decisive :

Autocratic leaders are typically decisive. When faced with a dilemma or a complex situation, a leader with this style tends to be able to think quickly and act swiftly.

(iii) Independent :

Along with being decisive, autocratic leaders often prefer to operate or make decisions independently. They rarely listen to the input or ideas of other employees. This can severely inhibit the quality and quantities of ideas the leader has to work with. Inability to share input also demotivates workers. In some companies where routine tasks must be performed efficiently, the ability of leaders to make fast, autonomous decisions is vital to consistency and uniformity in production.

The population has been further limited to the principals who are working in the secondary and higher secondary schools and students who are in class 9th to 12th standards.

For the selection of sample, the researcher collected the details of all the schools form Bilaspur, Janjgir-Champa districts of Chhattisgarh state. Using stratified random procedure from the list of schools the researcher identified 320 schools from government and nongovernment sectors from selected above mentioned two districts.

Sample Frame

District	Bilaspur	Janjgir-Champa	Total
Govt. Schools	80	80	160
Non-Govt. Schools	80	80	160
Total	**160**	**160**	**320**

Tools and Techniques Used :

Hence the researcher decided to use the following tools for the present study.

(a) Principal's Leadership Style Scale (PLS-5X) developed by the researcher has been used.

(b) Principal's Performance Measurement Scale (PPMS) developed by the researcher has been used.

Administration and Collection of Data:

After getting permission from the college authority and principal,the researcher visited the sampled college and 50 undergraduate students (25 Boys and 25 Girls) belongs to second year Science stream and 50 undergraduate students (25 Boys and 25 Girls) belongs to second year Arts stream were sampled out by means of simple random technique. First the researcher collects the data from Science stream and then from Arts stream. Then after establishing rapport with the students of Science stream, first the Test Anxiety Scale was handed over to them. Instructions were explained to selected students. They were instructed to answer the questionnaires individually, without any sort of consultation with their colleagues. The respondents were assured that their responses would be kept confidential and this is purely for research purpose. After completion of first test the students were requested to come to the class after **30** minutes for second test. Just after **30** minutes the Study Habits scale questionnaire is distributed to selected 50 students with due information for answering. Again they were instructed to answer the questionnaires individually, without any sort of consultation with their colleagues. After collecting both the questionnaire form the undergraduate Science students the researcher give thanks to the students and left the colleges. On the next day the researcher visits the same college and adopted the same procedure for collecting the data from the students of Arts stream.In this way the researcher collected the data from **1000** undergraduate Science and Arts students from selected government and private colleges of Bilaspur Districts of Chhattisgarh State. After collecting all the data they should be properly evaluated by the researcher as per scoring key.

Scoring Procedure :

1. Sum the responses on items 1, 4, 7, 10, 13, and 16
(authoritarian leadership).

2. Sum the responses on items 2, 5, 8, 11, 14, and 17
(democratic leadership).

3. Sum the responses on items 3, 6, 9, 12, 15, and 18
(laissez-faire leadership).

Scoring Interpretation

This questionnaire is designed to measure three common styles of leadership:

Means and Standard Deviations and t-value of the scores of Leadership Styles of the Principals based on their Locality

Leadership Styles	Gender	N	M	Sd	df	t-value	Significance
Authoritarian	Urban	160	16.43	2.0	318	2.59	p<.01
	Ruler	160	16.92	1.4			
Democratic	Urban	160	23.36	2.1	318	2.66	p<.01
	Ruler	160	22.82	1.5			
Laissez-faire	Urban	160	23.03	2.1	318	.653	NS

Measuring of Student's performance

S.No.	Activities	Min. Score	Max. Score
1.	Academic Activities	0	30
2.	Participation in Olympiads	0	20
3.	Participation in Science Exhibitions	0	10
4.	Participation in Sports	0	10
5.	Participation in Cultural Activities	0	10
6.	Various Club Activities	0	10
7.	NCC/NSS activities	0	100

Means and Standard Deviations and t-value of the scores of Student's performance based on locality of the school

Performance of Students	Locality	N	M	Sd	df	t-value	Significance
Academic Activities	Urban	160	18	1.9	318	1.63	NS
	Rural	160	17.7	1.3			
Olympiad Activities	Urban	160	0.1	0.2	318	2.7	p<.01
	Rural	160	0.04	0.2			
Science Exhibition	Urban	160	0.1	0.3	318	0	NS
	Rural	160	0.1	0.3			
Sports Activities	Urban	160	2.7	0.7	318	3.37	p<.01
	Rural	160	3.0	0.9			
Cultural Activities	Urban	160	0.1	0.4	318	2.0	p<.05
	Rural	160	0.2	0.5			
Club Activities	Urban	160	0.5	0.9	318	6.29	p<.01
	Rural	160	1.18	1.05			
NCC/NSS Activities	Urban	160	0	0	318	0	NS
	Rural	160	0	0			
Total Performance	Urban	160	21.16	2.38	318	.564	NS

R11: Urban School students significantly more active in participation in Olympiads than that of Rural school students.

R13: Rural school students have shown significantly more participation in sports activities than that of urban school students.

R14: Rural school students have shown significantly more participation in cultural activities than that of urban school students.

R15: Rural school students have shown significantly more participation in various club activities than that of urban school students.

R16: There is no significant difference in the level of overall performance of students based on their locality.

R18. There no significant difference in the academic performance of government and private school students.

R19 : Government School students significantly more active in participation in Olympiads than that of private school students.

R20 : There is no difference in the level of participation in Science Exhibitions by the government and private school students.

R21 : There is no difference in the level of participation in sports activities by the government and private school students.

R22 : Private school students have shown significantly more participation in cultural activities than that of government school students.

R23 : There is no difference in the level of participation in various club activities by the government and private school students.

R24 : There is no difference in the level of participation in NCC/NSS activities by the government and private school students.

$H_{o}6$. *There will be no effect of school principals' leadership on the Performance of its students.*

- Bartlett, K. R., &Bartling, F. P. (2007). A comparative study of leadership characteristics of adult education students and professionals. Presented at the academy of human resource development international research conference in the Americas. Indianapolis. IN. Retrieved May 1, 2009, from ERIC database. (ED504337).

- Beck, L.G. & Murphy, J. (1993). Understanding the Principalship: Metaphorical Themes 1920s-1990s. New York: Columbia University

- Bernard, Harold Wright. Psychology of Learning and Teaching. New York: McGraw-Hill Book Company, 1972.

- Bjork, L. G., & Kowalski, T. J. (2005). *The contemporary superintendent*. Thousand Oaks, CA: Corwin Press.

- Blankstein, A. M. (2010). *Failure is not an option: 6 principles for making student success the only option*. Thousand Oaks, CA: Corwin Press. National Forum Of Educational Administration And Supervision Journal

- Blankstein, A. M., Houston, P. D., & Cole, R. W. (2010). *Data-enhanced leadership*. Thousand Oaks, CA: Corwin Press.

- Bolman, L. G., Deal, T. E. (2008). *Reframing organizations: Artistry, choice, and leadership*. San Francisco: Jossey-Bass.

- Boschee, F. (2009). *Performance-based education: Developing programs through strategic planning*. Lanham, MD: Rowman& Littlefield.

- Boyer, J. A. (1982). Leadership and motivation: A study of the relationship style and the perceived need satisfactions of administrative subordinates (Unpublished doctoral dissertation, University of Akron, 1982). *Dissertation Abstracts International*, *43*(3), 599A.

performers, while education is to human beings. The 21st century has witnessed significant changes in education system in India. These changes have their origin in the evolution of the educational system during post-independence era and are in response to the economic and social development policies. (GOI 2004; The Indian Education System an overview). The Right to Education has been enacted by Parliament in the Fifty-third year of the Republic of India (Eighty-sixth Amendment) Act, 2002 in the year 2009. The quality of education is ensured through it.

The focus of teacher education until NCTE 2014 regulations was encompassed on teaching skills, sound pedagogical theory and professional skills.

Teacher Education = Teaching Skills + Pedagogical theory + Professional skills.

Teaching skills would include providing training and practice in the different techniques, approaches and strategies that would help the teachers to plan and impart instruction, provide appropriate reinforcement and conduct effective assessment. It includes effective classroom management skills, preparation and use of instructional materials and communication skills.

Pedagogical theory includes the philosophical, sociological and psychological considerations that would enable the teachers to have a sound basis for practicing the teaching skills in the classroom. The theory is stage specific and is based on the needs and requirements that are characteristic of that stage.

Professional skills include the techniques, strategies and approaches that would help teachers to grow in the profession and also work towards the growth of the profession. It includes soft skills, counseling skills, interpersonal skills, computer skills, information retrieving and management skills and above all life long learning skills.

An amalgamation of teaching skills, pedagogical theory and professional skills would serve to create the right knowledge, attitude and skills in teachers, thus promoting holistic development.

The Justice Verma commission also felt that most of teacher education programmes (such as the B.Ed. and D.Ed.) do not adequately engage with subject knowledge and practice of teaching is usually no more than five to six weeks and that, too, piece-meal in approach. Foundational and skill inputs introduced earlier are expected to be integrated and applied during this period. Due to paucity of time, 'lessons' are planned with virtually no reflection on the content of subject-matter and its organization. There is, therefore, a need for a longer duration programme, either an integrated model of a minimum duration of four years at the Bachelor's degree level or a two-year Bachelor's degree model after graduation.

2 Years B.Ed. Programme

In fact, the suggestion of duration of B.Ed. Programme for 2 years is very old. Almost all commissions on teacher education are also emphasised the duration of the course. The Kothari commission (1964-66) discussed about the duration of the Training Course.At the primary stage, a minimum of two years is needed; and if the course is lengthened to two years in all areas where it is one year, there would be no difficulty in providing the needed courses in subject-matter. At the secondary stage, where the duration of the course is only one year, it has been suggested that it should be increased to two years, to do justice to the existing heavy courses and to incorporate the proposed subject- matter courses. From a financial and practical point of view this does not seem feasible. However, it is possible to make better use of the existing duration by extending the working days in the academic year from the existing level of 180-190 days to 230 days. Academic years of such lengths have been adopted in some secondary training institutions with very good results and the committee recommend that the reform should be extended to all institutions without delay.

NCTE Regulations, 2014

The National Council for Teacher Education (NCTE) revisited its regulations and norms and standards for various teacher education programmes and notified new Regulations on

based engagement may include oral history projects and dialogue with a community of artisans etc. as part of Contemporary India and Education' or Pedagogy of Social Science/History'. Likewise, the pedagogy course on science may include environment based projects to address concerns of a particular village/city or a community.

The critics of One Year B.Ed. argue that, one year B.Ed. is in-sufficient time duration to provide adequate and stable knowledge in content areas, in pedagogy of teaching and at last in developing a sense of positive attitude towards teaching among the trainee-teachers. The National Commissionon Teachers (1985) under theChairmanshipof D.P. Chattopadhyaya stated that the existing one year B. Ed. Courses must be made effective both by the lengthening the time available and by revamping the current course and curricula. The Commission also suggested that two summer months may be added to the academic year ensuring a working year of at least 220 days, an increase in the working hours per day, and in some places appointment of additional staff and restructuring of the programme of studies allowing sufficient time for practical works in the school and community (B.N. Panda, 2001).

Objectives of the Study

Following are the objectives of the study;

1. To study the effect on the admission/ intake in B.Ed. Colleges after implementation of 2 year B.Ed. programme in Chhattisgarh.
2. To study the views of the teacher educators, students on the 2 year B.Ed. Programme.
3. To study the opinion of the student teachers about theory, practicum and internship of the B.Ed. Programme.

Research Questions to be answered

1. What is the effect of 2 year B.Ed. Programme in the intake of the state of Chhattisgarh
2. What are the major differences in the Curriculum of 1 year and 2 year B.Ed. Programmes ?
3. What is the Opinion of the student teachers up on theory, practicum and internship programmes of 2 year B.Ed. Curriculum ?
4. Is there any effect sex, age, experience of student teachers' opinion upon the theory, practicum and internship programmes of B.Ed. curriculum ?

METHOD:

Descriptive method of research was found to be most promising for the present research work as "It helps to explain educational phenomena in terms of the conditions or relationships that exist, opinions that are held by the students, teachers, parents and experts, processes that are going on, effects that are evident, or trends that are developing. Because of the apparent ease and directness of this method, a researcher can gather information in terms of individual's opinion about some issue, by a simple questionnaire. At times, descriptive survey is the only means through which opinions, attitudes, suggestions for improvement of educational practices and instruction, and other data can be obtained". (Kaul, 2009: 105)

DESIGN OF THE STUDY:

To study the growth and development of secondary teacher education at the national level in Chhattisgarh the investigator adopted four different methodological approaches in descriptive research which resulted in dividing the present research work into following four parts:

(i) Policy Perspectives in secondary teacher education by NCTE 2014 were studied on the basis of document analysis.

(ii) Analysis of secondary sources was done to study the expansion pattern of secondary teacher education in Chhattisgarh from 2010 was done.

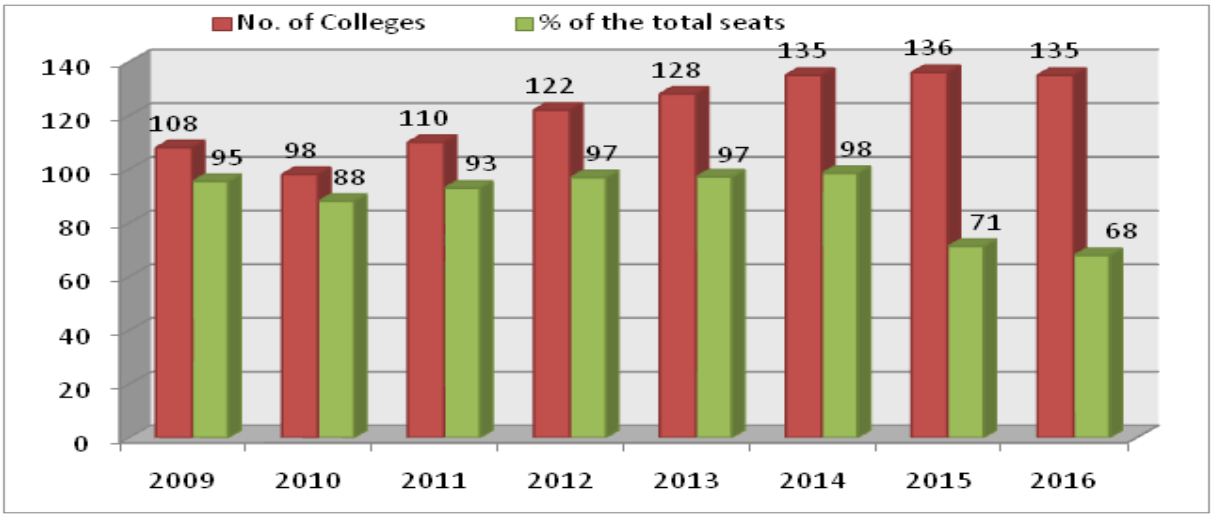

(e) Practice teaching Sessions, Micro Teaching etc.

Following are the data compared on these lines are furnished in table 4.2

Table 2

Difference in the One and Two year B.Ed. Curriculum

Item	One year B.Ed. Programme	Two year B. Ed. Programme
Duration	8-10 effective months	20-22 effective months
Objectives	To develop suitable teachers for the existing setup of school and society.	To understand the society in the past, present and future context and develop an equity and quality oriented citizens.
	To make them learn philosophical and psychological aspects of teaching.	To bring into the notice of social stratification prevailed in the society and equipping teachers to break it.
	Focus of the Teacher Education Programme was teacher. By this programme teachers were made equipped with various teaching methods and strategies.	Focus of the Teacher Education Programme is to know your-self first. By knowing self, a teacher can better understand the learner.
	Teacher Empowering curriculum.	Student Empowering curriculum.
	Based on Behavioural Theories of Teaching and Learning.	Based on Constructivism theory of Teaching and Learning
Curriculum (Theory)	**Total 6 Theory Papers** Paper I : Teacher in Emerging Indian Society Paper II : Development of Learner and Teaching Learning Process. Paper III : Development of Educational System in India Paper IV : Essentials of Educational Technology and Management Methodology of 2 School Subjects Paper V &VI : Any two school subjects to be studied as method papers. Practical Practice Teaching 40 lessons in both school subjects. Co-curricular Activities including physical & health education and work	**Total 12 Theory Papers** **1st Year 6 theory Papers** Paper I : Childhood and Growing Up Paper II :Contemporary Indian Society &Education Paper III :Perspectives in Education Paper IV :Language, Society and Education Paper V:Language Proficiency (Hindi/English) Paper VI :Methodology of 1 School Subject **2nd Year 6 theory Papers** Paper I : Learning & Teaching Paper II : Gender, School & Society Paper III: Curriculum & Knowledge Paper IV : Assessment For Learning Paper V : School Culture, Management & Teacher Paper VI :Methodology of 1 School Subject

The focus of the 2 year B.Ed. Programme is society and it's Education by knowing self and social requirements.

(c) Curriculum (Theory)

The in one year B.Ed. programme was consisted of 6 theory papers. The focus of the entire theory part was to enrich the teacher. They were made to understand how the present system of education has emerged. What is expected by a teacher to do and methodology of two school subject were included.

The entire teacher education programme was so superficial that, knowledge about teaching and learning limits to certain pages. In the one year B.Ed. course – the content areas include – Teacher in Emerging Indian Society which included role of education in society and the duties of teacher in such society. They also made informed about the historical development of the education i.e. How it has taken present shape and size ? Psychological aspects of learning, based on behavioural theories were also part of the curriculum. The technological advancement in education and educational management were the compulsory theory papers and methodology of two school subjects were made elective.

Effects of the one year B.Ed. Progamme

As the output of the teacher education, the society was divided in to three classes viz. Higher, middle and lower on the basis of socio-economic status.

The present education system has created, maintained and promoted to widen the socio-economic class gaps. Now it seemed that the entire teacher education programme as a spiral. It was developed by the middle class, for the middle class to maintain the middle class in the society.

Now the status of the people was measured by the school in which their wards are studying. Types of schools range from roofless to total air-conditioned, English medium to vernacular schools. Board-wise differences like CBSE, ISCE and state board examinations and management wise differences like private, government aided, government schools, schools run by local bodies and minority communities. Each one has its own agenda and aims and objectives.

2 year B.Ed. Programme

In the theory part of 2 year B.Ed. curriculum there are 12 theory papers equally distributed 6 per year.

The focus of this curriculum is to knowing self. When a person knows himself better with his own merits and demerits, he may understand about the child in-front of him.

This curriculum also reflects how the society has been divided into different strata, and the role of education in bridging the strata. What is the language of the society, and how can school curriculum be transacted in the language of the society.

The gender gap was a part of the social culture. In the changing scenario of the society, future teachers can learn about the role of education to minimize the gender gap.

Result –4

The One year Teacher Education programme is a composition of 6 theory papers including 2 school subject methodologies, and practical and internship/ practice teaching programme. The student teacher is supposed to write in about 15 copies as assignments and other practical work. The one year teacher education curriculum does not have the capacity to deal with the different aspects of multi lingual

and internship programmes of 2 year B.Ed. Programme have been shown in the following graph.

Table 3

Means and standard deviations of the opinion of student teachers on theory, practicum and internship programmes.

Statistic	Opinion Th	Opinion Pr	Opinion Int	Total
Mean	36.15	38.5	38.64	113.28
SD	4.6	4.6	4.41	10.36652

As per the table number 2, it can be stated that overall opinion of student teachers about 2 year B.Ed. Programme is positive in nature as the computed mean value of overall opinion is 113.28 which is more than the average value of the scale 90 (minimum and maximum scores are 30 and 150).

Result 9.

The opinion of student teachers about theory, practicum and internship parts of 2 year B.Ed. programme are positive. Overall opinion of student teachers is about 2 year B.Ed. programme is also positive.

RQ5. Is there any effect sex, age, experience of student teachers' opinion upon the theory, practicum and internship programmes of B.Ed. curriculum ?

Graph No. 2

The graphical representation of mean scores and SD.of opinions of student teachers about theory, practicum and internship.

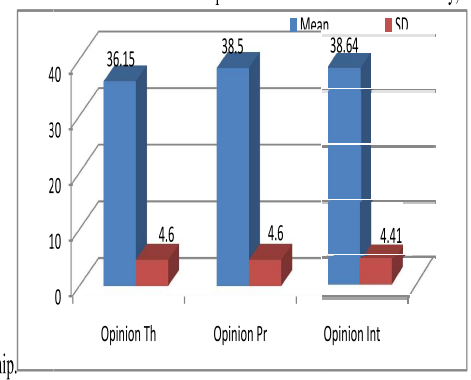

In order to study opinion of the student teachers opinion on the basis of their sex, locality and years of experience the data were segregated on various demographic variables and student t-test was employed. The results of the same are shown in the following table number 4 to 7

Table 4

Effect of Sex of the Student teachers on the opinion about theory, practicum and internship programmes of 2 year B.Ed.

	Sex	N	Mean	Std. Dev.	Std. Err Mean	df	t-value	Significance
Opinion Theory	Male	59	36.53	4.504	.586	148	.822	NS
	Female	91	35.90	4.607	.483			
Opinion Practicum	Male	59	38.47	4.794	.624	148	.054	NS
	Female	91	38.52	4.493	.471			
Opinion Internship	Male	59	38.58	4.735	.616	148	.124	NS
	Female	91	38.67	4.219	.442			
Total	Male	59	113.08	10.05	.568	148	.290	NS
	Female	91	113.57	10.73	.621			

Graph No. 4

The graphical representation of Effect of age of the Student teachers on the opinion about theory, practicum and internship programmes of 2 year B.Ed. course

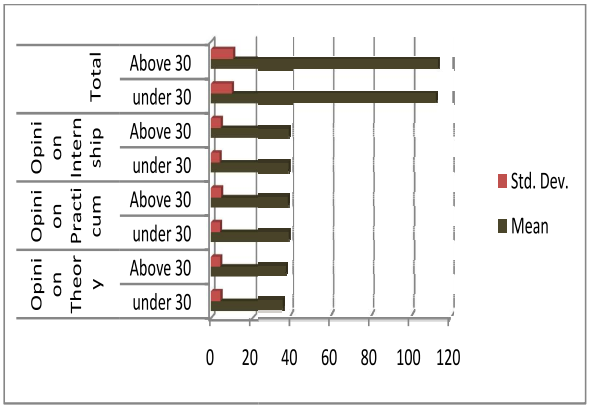

Table 6

Effect of Experience of the Student teachers on the opinion about theory, practicum and internship programmes of 2 year B.Ed.

	Level of Experience	N	Mean	Std. Dev.	Std. Error Mean	df	t-value	Significance
Opinion Theory	Experienced	56	37.51	3.88	.498	148	3.07	S p<.01
	Fresher	94	35.33	4.71	.527			
Opinion Practicum	Experienced	56	39.1	4.9	.624	148	1.23	NS
	Fresher	94	38.13	4.28	.517			
Opinion Internship	Experienced	56	39.37	4.47	.714	148	1.60	NS
	Fresher	94	38.19	4.29	.642			
Total	Experienced	56	116	10.29	.598	148	2.39	S p<.01
	Fresher	94	111.9	10.0	.571			

The above table 6 makes us know that, the mean scores of the opinion abc

The above table 6 makes us know that, the mean scores of the opinion about theory, practicum and internship programmes of based upon the experience of student teachers viz. experienced and fresher are 37.51.35.33;39.1,38.13 and 39.37,38197 respectively. In order to study the significance of the differences in mean, t-test was employed.

There is a significant difference shown between the mean scores of opinion about theory papers between fresh and experienced teachers. (t= 3.07, df 148, p<.01).

The computed t-values are less than the table values for Opinion about Practicum and internship programmes. Hence it can be stated that –

Result 12. Experienced student teachers are having significantly better opinion than Fresh student teachers about the theory part of 2 year B.Ed. programme.

There is no significant difference in the opinion about practicum and internship programmes of 2 year B.Ed. Programme among the fresh and experienced teachers. Experienced student teachers had more positive opinion on about 2 year B.Ed. Programme than inexperienced student teachers. Graphical representation of the result is given in graph no. 5

Graph No. 5

The graphical representation of Effect of age of the Students teachers on the opinion about 2 year B. Ed. course

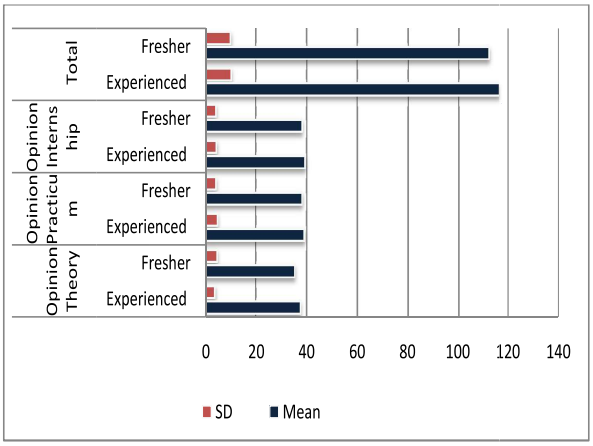

3 Item wise analysis of the data

In the item wise analysis it is noticed that –

Item no 6 – There is much difference between 'evaluation for learning' and 'evaluation of learning' ?

The response of the student teachers on this placed in the following table no. 7. It states that 18 percent are fully agreed with the statement and about 43 percent are agreed.

has provided opportunity to know strengths and weaknesses of my-self." 54.7 percent of student teachers are fully agreed with the statement and about 38 percent are agreed. 1.3 percent undecided, about 6 percent were not agree with the item.

Table 92 year B.Ed. Programme has provided opportunity to know strengths and weaknesses of my self

Options	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Fully Not Agreed	5	3.3	3.3	3.3
Not Agreed	4	2.7	2.7	6.0
Undecided	2	1.3	1.3	7.3
Agreed	57	38.0	38.0	45.3
Fully Agreed	82	54.7	54.7	100.0
Total	150	100.0	100.0	

Graphical representation of the result is given in graph no. 7

Graph 7

2 year B.Ed. Programme has provided opportunity to know strengths and weaknesses of my self

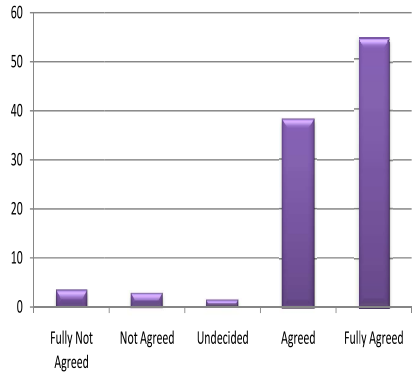

Result 15.

93 percent of the student teachers accept that 2 year B.Ed. programme has provided opportunity to know strengths and weaknesses of his/her self.

Item no 17– 2 year B.Ed. programme has provided opportunity to learn ICT.

The table 10 shows the response of the student teachers on item "This programme has provided opportunity to learn and use of ICT in Education." Only 6.7 percent of student teachers are fully agreed with the statement and about 38.7 percent are agree. 10 percent undecided and about 45 percent were not agree with the item. Graphical representation of the result is given in graph no. 8

Table 10

2 year B.Ed. Programme has provided opportunity to learn ICT

Table 10

2 year B.Ed. Programme has provided opportunity to learn ICT

Options	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Fully Not Agreed	16	10.7	10.7	10.7
Not Agreed	51	34.0	34.0	44.7
Undecided	15	10.0	10.0	54.7
Agreed	58	38.7	38.7	93.3
Fully Agreed	10	6.7	6.7	100.0
Total	150	100.0	100.0	

Graph 8

2 year B.Ed. Programme has provided opportunity to learn ICT

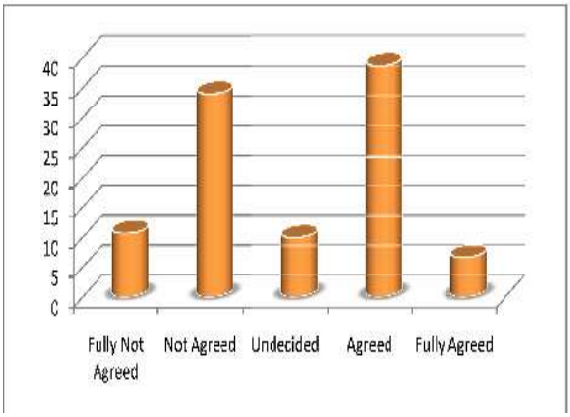

Result 16.

45 percent of the student teachers accept that 2 year B.Ed. programme has provided opportunity to learn ICT.

Item no 25– 2 year B.Ed. programme has provided opportunity to understand student's individual differences.

The table 11 shows the response of the student teachers on item "2 year B.Ed. Programme equipped me to understand the

teachers. It has strengthened them in writing reflection, able to understand the individual differences among children, helped them to recognize self identity. It has made them understand the school culture is a creation of principal and staff together. They understood difference between the 'learning for evaluation' and 'evaluation for learning.'

There was no difference in the opinion about theory, practicum and internship programmes of B.Ed. curriculum based on the sex, locality and age of the student teachers.

It is concluded that more stress on ICT area may be given in the curriculum so that more digital savvy teachers may be produced.

REFERENCES

Bhakoo, Shivani. (2006). Government to Check mushrooming of B.Ed. Colleges. The Tribune. Chandigarh, Jan. 25.

Chaurasia, G. (1977). Challenges and Innovations in Education. New Delhi: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

Darji, Brijesh (2015). Study of Innovative Practices in Teacher Education Institutions of Gujarat State. Ph.D. Thesis. CASE, The M.S. Uni. Of Baroda, Vadidara, Guajarat. Shodhganga. http://hdl.handle.net/10603/64280

Das, R. (1991). A comparative study of the Evaluative Procedures of the Secondary Teacher- Training Institutions in Gujarat State, an unpublished M.Phil. Thesis, The M. S. University of Baroda. In M. B. Buch (Ed.), *Fifth Survey of Research in Education*. New Delhi: NCERT.

Deo, D. S. (1985). To Study the Practical Programme other than Practice Teaching in Teacher Education Institutions. In M. B. Buch (Ed.), Fourth Survey of Research in Education. New Delhi: NCERT.

GOI (2012) : Vision of Teacher Education in India, Quality and Regulatory Perspective Department of School Education and Literacy and Ministry of HRD, Government of India,(2012),Vision of Teacher Education in India, Quality and Regulatory Perspective, retrieved from http://www.mhrd.gov.in/documents/term/83

Gupta, Rainu (2011). Teacher Education in India and United States of America: A Study. University News. Vol. 49. No. 46. 11-16.

Guthrie. (1983). An evaluation of Secondary Teacher Training in Papua, New Guinea. Dissertation Abstracts International. 44 (09), 27 March, 1984.

Hemambujam, K. (1983). A Critical Study of Teacher Education at the Secondary level in Tamil Nadu. Unpublished Ph.D. (Edu.) Thesis, Karnataka University

NCERT (1971) :Education and National Development: Report of the Education Commission, 1964-66 (Kothari Commission). NCERT New Delhi. 1971.

NCERT (2007). *Seventh All India School Education Survey: Teachers and their Qualifications*. New Delhi: NCERT.

NCTE (1998) Curriculum Framework for Quality Teacher Education. NCTE, New Delhi.

NCTE (2001)National Council for Teacher Education. *Problems-Issues-Status studies on Teacher Education in Assam*. New Delhi: NCTE.

NCTE (2001)National Council for Teacher Education. *Problems-Issues-Status studies on Teacher Education in AP*. New Delhi: NCTE.

Nagpure, V. R. (1991). A Critical Study of the System of Teacher Education at The